माह जुलाई 2023 से सितम्बर 2023 वर्ष 9 अंक 3 मुल्य 50 रूपया

साहित्य सरोज

RNI No- UPHIN/2017/74520

त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका

ज्योति फिटनेस प्वाइंट
ग्राम बबुरी सिरकुतिया पोस्ट बबुरी, जनपद चन्दौली, उत्तर प्रदेश
वजन बढ़ाना हो या हो घटाना
आईये लीजिए तीन दिन निःशुल्क ट्रायल क्लास, तब कीजिएगा भरोसा
और बनाईये अपना एक सुनहरा कल
न्यूट्रिशन प्रोडेक्ट, आन/आफ लाइन स्पोर्ट, अपने समयानुसार सुबह/शाम निशुल्क योगा क्लास, सप्ताह में दो दिन हैपी टू हेल्थ कार्यक्रम, सिनियर से सवाल-जबाब
80% nutrition + 20% workout
100% Results
यदि खुद पर हो भरोसा कुछ कर गुजरने का और चाहती हैं खुद को, पति को, बच्चों को या अपने पूरे परिवार को फिट, खूबसूरत और थकान मुक्त रखना या चाहती हों पति का हाथ बटाना अपने सपनों को पूरा करना आईये
Before
After
F resh
I ntelligent
T ension free
N O Negativity
E nergetic
S tylish
S ocial
सोच क्या रहे हैं, मोबाइल उठाईये काल करीये वेलनेस कोच
JYOTI
8707425153

साहित्य सरोज
होली विशेषांक
संस्मरण विशेषांक
तीज सुहागी विशेषांक
साझा काव्य संकलन
ISBN 978-93-5281-820-4
तुम्हारी याद सताती है।
फिटनेस विशेषांक
त्रैमासिक पत्रिका साहित्य सरोज
प्रथम प्रकाशन 2014, RNI:UPHIN /2017/74520
प्रकाशन स्थल - गहमर, गाजीपुर (उ0प्र0) 232327
वेबसाइट : https://sahityasaroj.com ईमेल: sahityasaroj1@gmail.com
प्रधान संपादक
श्रीमती कान्ति शुक्ला
99930 47726
संपादक
श्रीमत रेनुका सिंह
98073 03555
प्रकाशक
अखंड प्रताप सिंह
अखंड गहमरी
9451647845

साहित्य सरोज

एक सम्पूर्ण साहित्यिक पत्रिका

वर्ष-9 अंक -3

RNI No- UPHIN/2017/74520

माह जुलाई 2023 से सितम्बर 2023

संस्थापिका -: स्व०श्रीमती सरोज सिंह

प्रकाशक -: अखंड प्रताप सिंह

प्रधान संपादक -: श्रीमती कांति शुक्ला

संपादक -: रेनुका सिंह

प्रधान कार्यालय -:

मेन रोड,गहमर, गाजीपुर मो० 9451647845

ईमेल **sahityasaroj1@gmail.com**

बेवसाइट-: **https://sahityasaroj.com/**

प्रति अंक -50रूपये मात्र, चार वर्ष शुल्क -: 500 रूपये मात्र, आजीवन 5000 रूपये मात्र

स्वत्वाधिकारी,मुद्रक, प्रकाशक अखंड प्रताप सिंह, रघुवर सिंह का कटरा, मेन रोड, ग्राम व पोस्ट गहमर, जनपद गाजीपुर, उ0प्र0 पिन 232327 द्वारा पंकज प्रकाशन आमघाट,गाजीपुर से मुद्रित एवं अखण्ड प्रताप सिंह द्वारा प्रकाशित।

पत्रिका में छपे लेख,कहानीयॉ एवं अन्य विषयक सामाग्री लेखक के अपने विचार है, इनका किसी व्यक्ति या स्थान से मिलना संयोग मात्र है। किसी विवाद का निपटारा गाजीपुर न्यायालय में होगा।

तकनीकि पक्ष-: कम्पोजिंग, डिजाइनिंग, कवर डिजाइनिंग अखंड प्रताप सिंह"अखंड गहमरी"

प्रिटिंग पंकज प्रकाशन आमघाट गाजीपुर

चित्र -गूगल ईमेज द्वारा।

इस अंक में

कहानी	अरूण अर्णव खरे	04
गीत	रमा प्रवीर वर्मा	09
संस्मरण	डॉ आलोक प्रेमी	10
कविता	दुर्गा कुमारी	12
व्यंग्य	विवेक रंजन श्रीवास्तव	13
कविता	डा. सरला सिंह	14
खुशी	गिरिश पंकज	15
व्यंग्य	डा0 राम कुमार चतुर्वेदी	16
श्रद्धांजलि	घनश्याम मैथिल अमृत	17
कहानी	सतेन्द्र पाण्डेय	19
लेख	पुष्प लता शर्मा	20
लेख	प्रभू घोष	22
लेख	रेखा दुबे	23
व्यंग्य	कमलेश पाण्डेय	24
कान्ति का कोना		25
लेख	संजय वर्मा	26
कहानी	सतीश बब्बा	27
एकांकी	सीमा रानी मिश्रा	29
कहानी	डॉ प्रिया सूफी	30
कविता	रेनुका सिंह	31
कविता	सुधा बसोर	31
कविता	राम भरोस शर्मा	31
लेख	सोनी सुगंधा	32
कविता	नीलम शर्मा	32
लेख	वन्दना कुमारी	33
लेख	कंचन जायसवाल	34
संस्मरण	अलका गुप्ता	35
कहानी	अलका गुप्ता	36

9वॉ गोपाल राम गहमरी साहित्यकार सम्मेलन एवं सम्मान समारोह 2023

दिनांक 22 से 24दिसम्बर 2023

स्थान गहमर गाजीपुर उत्तर प्रदेश

लेख

गोपाल राम गहमरी

गोपाल राम गहमरी (1866-1946) हिंदी के महान सेवक, उपन्यासकार तथा पत्रकार थे। वे ३८ वर्षों तक बिना किसी सहयोग के 'जासूस' नामक पत्रिका निकालते रहे, १०० से अधिक उपन्यास लिखे, सैकड़ों कहानियों के अनुवाद किए, यहां तक कि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 'चित्रागंदा' काव्य का भी (पहली बार हिंदी अनुवाद गहमरीजी द्वारा किया गया) अनुवाद किए। वह ऐसे लेखक थे, जिन्होंने हिंदी की अहर्निश सेवा की, लोगों को हिंदी पढ़ने को उत्साहित किया, देवकीनंदन खत्री के बाद अगर किसी दूसरे लेखक की कृतियों को पढ़ने के लिए गैरहिंदी भाषियों ने हिंदी सीखी तो वे गोपालराम गहमरी ही थे। इन्होंने बंगला से नाटकों, उपन्यासों का अनुवाद हिन्दी में किया । बहुमुखी प्रतिभा के धनी गोपालराम गहमरी कविताएं, नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध सहित साहित्य की समस्त विधाओं में लेखन किया। २०० से ज्यादा जासूसी उपन्यास गहमरी जी ने लिखे। 'अदभुत लाश', 'बेकसूर की फांसी','सरकती लाश', 'डबल जासूस', 'भयंकर चोरी', 'खूनी की खोज' इनके प्रमुख उपन्यास हैं।

गोपाल राम गहमरी का जन्म पौष कृष्ण ८ गुरुवार संवत् १९२३ ;सन् १८६६ ईद्ध में उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले के गहमर में हुआ था। इनके दादा श्री जगन्नाथ साहू फ्रांसीसी छींट के व्यापारी थे। उनके दो पुत्र थे-रघुनंदन और बृजमोहन। रघुनंदनजी के तीन पुत्र हुए राम नारायण, कालीचरण और रामदास। गोपालराम गहमरी, रामनारायणजी के पुत्र थे। कालीचरण निरूसंतान थे और रामदास के एक ही पुत्र थे महावीर प्रसाद गहमरी। गोपालराम गहमरी को भी एक ही पुत्र थे इकबाल नारायण। महावीर प्रसाद गहमरी के दो पुत्र थे देवता प्रसाद गहमरी एवं दुर्गा प्रसाद गहमरी। देवता प्रसाद गहमरी बहुत दिनों तक काशी से प्रकाशित होने वाले दैनिक 'आज' और 'सन्माग' से जुड़े रहे। गोपाल राम गहमरी जब छह मास के तभी पिता का देहांत हो गया । उनकी प्रारंभिक शिक्षा गहमर में हुई थी। वहीं से वर्नाक्यूलर मिडिल की शिक्षा ग्रहण की। १८७६ में मिडिल पास किया। फिर वहीं गहमर स्कूल में चार वर्ष तक छात्रों को पढ़ाते रहे और खुद भी उर्दू और अंग्रेजी का अभ्यास करते रहे। इसके बाद पटना नार्मल स्कूल में उत्तीर्ण होने पर मिडिल पास छात्रों को तीन वर्ष पढ़ाने की शर्त पर एडमिशन हुआ। आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण इस शर्त को स्वीकार कर लिया। लेकिन बीच में ही पढ़ाई छोड़कर गहमरी जी बेतिया महाराजा स्कूल में हेड पंडित की तभी पिता का देहांत हो गया । उनकी प्रारंभिक शिक्षा गहमर में हुई थी। वहीं से वर्नाक्यूलर मिडिल की शिक्षा ग्रहण की। १८७६ में मिडिल पास किया। फिर वहीं गहमर स्कूल में चार वर्ष तक छात्रों को पढ़ाते रहे और खुद भी उर्दू और अंग्रेजी का अभ्यास करते रहे। इसके बाद पटना नार्मल स्कूल में उत्तीर्ण होने पर मिडिल पास छात्रों को तीन वर्ष पढ़ाने की शर्त पर एडमिशन हुआ। आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण इस शर्त को स्वीकार कर लिया। लेकिन बीच में ही पढ़ाई छोड़कर गहमरी जी बेतिया महाराजा स्कूल में हेड पंडित की जगह पर कार्य करने चले गए। वर्ष १८८८ ई में नार्मल की परीक्षा पास की और १८८६ में रोहतासगढ़ में हेडमास्टर नियुक्त हो गए। बंबई के प्रसि(प्रकाशक सेठ गंगाविष्णु खेमराज के आमंत्रण पर १८६१ में गहमरी जी बंबई चले गए। १८६२ में गहमरी जी राजा रामपाल सिंह के निमंत्रण पर कालाकांकर चले आए तो यहां वे संपादकीय विभाग से संबंध हो गए और एक वर्ष तक रहे। यहीं पर काम करते हुए बांग्ला सीखी और अनुवाद के जरिए साहित्य को समृद्ध करने का प्रयास भी किया। गहमरी जी एक जगह बहुत दिनों तक नहीं टिकते थे। एक बार फिर सन् १८६३ में वे बंबई की ओर उन्मुख हुए और यहां से निकलने वाले पत्र 'बंबई व्यापार सिंधु' का संपादन करने लगे जो महज ६ महीने के बाद बंद हो गया, उसके बाद एक हिंदी प्रेमी एसएस मिश्र ने गहमरी जी को बुलाकर उन्हें 'भाषा भूषण' के संपादन का भार सौंपा मगर यह भी अधिक दिन तक नहीं चल सका । पं बालमुंकुद पुरोहित मंडला से मासिक 'गुप्तकथा' का प्रकाशन तो शुरू हुआ, लेकिन यह भी बंद हो गया, उसक बाद गहमरी जी दुबारा मुंबम्ई की तरफ रूख किया यहां इनके मित्र खेमराज जी ने 'श्री वेंकटेश्वर समाचार' नाम से पत्र का प्रकाशन शुरू कर दिया था। यह पत्र गहमरी जी के कुशल संपादन में थोड़े समय में ही लोकप्रिय हो गया। इसी दौरान प्रयाग से निकलने वाले 'प्रदीप' (बंगीय भाषा) में ट्रिब्यून के संपादक नगेंद्रनाथ गुप्त की एक जासूसी कहानी 'हीरा मूल्य' प्रकाशित हुई थी। गहमरीजी ने इस कहानी का हिंदी में अनुवाद कर श्री वेंकटेश्वर समाचार में कई किश्तों में प्रकाशित किया। इतने संघर्ष के बाद गहमरी जी पाठकों के मन-मस्तिष्क को समझ चुके थे। वे यह भी समझ चुके थे कि जासूसी ढंग की कहानियों के जरिए ही पाठकों का विशाल वर्ग तैयार किया जा सकता है। गहमरी जी पूरी तैयारी के साथ जासूसी ढंग के लेखन की ओर उन्मुख हुए। जनवरी, १६०० में 'जासूस ' नामक पत्रिका निकलना शुरू हुई, जिसने अपने प्रवेशांक से ही लोकप्रियता की सारी हदों को पार करते हुए शिखर को छू लिया था। इसकी अपार लोकप्रियता को देखकर गोपालराम गहमरी जब जासूसी ढंग की कहानियों और उपन्यासों के लेखन की ओर प्रवृत्त हो हुए तो फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा यह पत्रिका अपनी पाठकों की बदौलत और उनके अपार स्नेह के कारण एक दो वर्ष नहीं, पूरे ३८ वर्ष तक गहमर जैसे गांव से निकलती रही। हिन्दी साहित्य का यह पुरोधा वाराणसी के बेनियाबाग के पास भवन बना कर वही रहने लगा और वही ८० वर्ष की आयु में २० जून १६४६ को इस दुनिया से विदा होगया और अपने पीछे छोड गया हिन्दी साहित्य का कभी न मिटने वाला इतिहास और साथ ह दे गया लोगो को कुछ कर गुजरने की प्ररेणा।

अखंड गहमरी
प्रकाशक साहित्य सरोज
9451647845

कहानी

अपने अपने मकड़जाल

"हाऊ आर यू वर्जिन किंग"?राजीव राठी ने पवन मिश्रा को छेड़ते हुए कहा "यार तूने शादी क्यूँ नहीं की, अभी तक कुँवारे के कुँवारे हो .. बिना पार्टनर के जिन्दगी कितनी अधूरी और रंगहीन होती है, यह अब तक तुम समझ ही गए होगे? किंग-विंग नहीं, छड़े कहो छड़े वीरेंद्र जिसने उन दोनों की बातें सुन ली थी, ने कहकहा लगाते हुए कहा।

पवन मिश्रा ने हँसते हुए बात को टालना चाहा यार, समझ लो मेरी किस्मत में शादी नहीं थी, तो नहीं हुई अपनी खुशी के लिए छड़ा ही समझ लो भई वीरेंद्र।

राजीव, वीरेंद्र और पवन पच्चीस सालों बाद मिले थे, बिलकुल वैसे ही बिन्दास और बेलौस जैसे तीनों कालेज के दिनों में हुआ करते थे । राजीव, पवन की बात से संतुष्ट नहीं हुआ, बोला यार लगता है तुम कभी प्रभजोत को भूल ही नहीं पाए .. वह तो अपना घर बसाकर पता नहीं कहाँ होगी अब, बड़े-बड़े बच्चे होंगे उसके .. एल्युमिनी मीट में उसे बुलाने के लिए भी रामेंद्र नागर ने अनेक लोगों से सम्पर्क किया था पर उसके बारे में किसी को कुछ मालूम नहीं था।

अरे यार उससे सबसे ज्यादा नजदीक तो अपना यह कुँवारा बादशाह ही था .. जब इसे ही नहीं पता तो किसे पता होगा - वीरेंद्र ने कहा, फिर पवन के कंधे पर हलके से धौल जमाते हुए बोला - और कितना इन्तजार करोगे उसका, अभी बहुत देर नहीं हुई है .. लड़की हम ढूँढ़ देंगे .. जिन्दगी में एक पार्टनर होना ही चाहिए जिससे नितान्त अकेले पलों को बाँटा जा सके।

अरे यार तुम भी ये क्या बात लेकर बैठ गए, हम यहाँ एल्युमिनी मीट में एन्जांय करने आए हैं या बेकार की बातों में समय गवाँने पवन ने एक बार पुनः बातों का रुख मोड़ने की कोशिश की ।

भाभी भी आई हैं साथ में या अकेले ही आए हो

भाई मैं उनके बिना कहीं आता जाता नहीं दोपहर में मिलवाता हूँ तुम्हें अपनी ड्रीम गर्ल से,अभी वह आराम फरमा रहीं हैं .. मेरा छोटा बेटा भी साथ आया है - राजीव ने दाहिनी आँख दबाते हुए शब्दों को नाटकीय अन्दाज में चबाते हुए कहा ।

पवन चलने को हुआ ही था कि रत्नेश सारस्वत की आवाज सुनाई दी - ओए पवन .. तुम तो हमसे भी पहले आ गए - कहते हुए रत्नेश ने पवन को बाहों में भर लिया - बहुत मुटा गए हो यार।

अच्छा .. तुम तो जैसे अभी भी सिंगल पसली वाले हो, कबसे आइना नहीं देखा तुमने .. पेट मटका हो रहा है - पवन ने ठहाका लगाते हुए कहा । इस ठहाके के मार्फत वह दोस्तों को यह भी जताना चाहता था कि शादी न करके भी वह कितना खुश है ।

भाई ये सुखी लोगों की निशानी है रत्नेश ने भी हँसते हुए कहा -रत्ना, इनसे मिलो .. हमारे बैच के एकमात्र लकी फेलो, जिन पर कालेज की एकमात्र लड़की फिदा थी।

अच्छा, तो ये पवन भाई हैं, नमस्ते भाई साब, इनके मुँह से अनेक बार आपका नाम सुना है।रत्ना ने हाथ जोड़ते हुए कहा।

अच्छा तो इसकी जलन अभी तक बरकरार है .. भाभी, आपने ठीक से खबर नहीं ली इसकी, अब ध्यान रखिए- पवन ने भी मजाकिया लहजे में कहा ।

आप अकेले ही आए हैं भाई साब, भाभी जी को नहीं लाए - रत्ना ने पूछा ।

मेरी किस्मत रत्नेश जैसी कहाँ अकेला हूँ तो अकेला ही आऊँगा- कहते हुए पवन रिजवान की ओर बढ़ गया जिसकी कार उसी समय गेस्ट हाउस के सामने रुकी थी ।

दोनों गले मिले .. कुछ औपचारिक बातें हुई -तू कुछ तैयारी करके आया है कि नहीं .. तुझे स्टेज पर परफोंर्म करना पड़ेगा।

कहाँ यार .. अब सब छूट गया, और फिर पुराने एक्टर्स की मिमिक्री कौन पसंद करता है आजकल ..।

कन्हैयालाल और ओमप्रकाश के तो नाम भी नहीं सुने होंगे इन बच्चों ने, नए एक्टर्स की मिमिक्री अपने से होती नहीं।

भई सब पुराने लोग ही इकट्ठे हो रहे हैं .. शाम को धमाल मचने वाला है और तू छूट नहीं सकेगा।

कहानी

पवन कुछ और दोस्तों से मिलकर अपने कमरे में आ गया । हरेक की नजरों में उसे एक ही प्रश्न तैरता दिखाई दिया, कि उसने शादी क्यूँ नहीं की ? जो दोस्त उसके और प्रभजोत के बारे में जानते थे उनकी आँखों में तो उसने संशय के साथ ही उपहास का भाव भी देखा था द्य उनकी भेदती आँखों का उसने फिलहाल सामना तो कर लिया था लेकिन लंच और फिर उसके बाद शाम को होने वाले मिलन कार्यक्रम में वह किस-किसको जवाब देगा ?अधिकतर लोग अपनी पत्नियों के साथ आए थे,

कुछ के साथ बच्चे भी थे । जिनकी पत्नियाँ नहीं आईं थी उनके पास कोई न कोई वाजिब कारण था।

उसके पास भी वाजिब कारण था लेकिन उसी कारण ही तो वह प्रश्नों के चक्रव्यूह में घिर गया था। मन खिन्न हो गया था। कैसे दोस्त हैं उसके .. यहाँ जिन्दगी की भागमभाग से दूर अपने पुराने साथियों के साथ एन्जांय करने एकत्र हुए हैं या उसकी शादी को डिस्कस करने, उसके जीवन की पर्तें उधेड़ने ? नहीं की उसने शादी, नहीं करनी थी उसे .. यह उसका व्यक्तिगत मामला है, फिर इनका इतना इंटरेस्ट क्यूँ है इस बात में। उसके मन का उत्साह फीका पड़ गया था, मन में अजीब सी बेचैनी अनुभव होने लगी थी ।

पवन और प्रभजोत बैचमेट थे। दोनों की पहली मुलाकात इंजीनियरिंग कह्लेज में एडमीशन के लिए डाक्युमेंट सब्मिट करने के दौरान हुई थी । पवन के बाद प्रभजोत का नम्बर था । पवन डाक्युमेंट जमा करने के बाद जैसे ही मुड़ा था उसकी नजरें प्रभजोत से मिलीं और उसने हैलो कहा, प्रत्युत्तर में प्रभजोत मुस्करा दी थी। इसके बाद दोनों ने ही अपने भीतर कुछ-कुछ होता महसूस किया था । ये कुछ-कुछ क्या है, किशोरावस्था के उत्तरार्द्ध की देहलीज पर खड़े उन दोनों में से किसी को समझ में नहीं आया था।

कालेज खुलने पर जब दोनों दुबारा मिले और पवन ने अपने दिल में तुलिप के सैकड़ों फूल महमहाते मससूस किए तो उसे लगा कि यह कुछ विशेष अनुभूति है जो प्रभजोत के सामने आते ही उसका दिल अनुभव करने लगता है। प्रभजोत के मन की स्थिति भी कुछ-कुछ ऐसी ही थी। उसे भी पवन से मिलकर अपनी साँसों में जास्मिन की खुशबू महसूस हुई थी और फिर लज्जावश वह नजरें उठाकर पवन को देखने की हिम्मत नहीं जुटा पाई थी। प्रभजोत ने इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग को पहली पसंद के रूप में चुना था जबकि पवन की प्रथम चव्वाइस सिविल इंजीनियरिंग थी। एक साल हो गया था दोनों को साथ पढ़ते हुए पर दोनों अपने ही दायरे में सिमटे रहे। दोनों के बीच कभी ज्यादा बात नहीं हुई । जब कभी बात हुई भी तो सेसनल, ड्राइंग और प्रैक्टिकल को लेकर । दोनों के बीच दिल का अजीब रिश्ता था, आँखों में प्रेम झिलमिलाता था लेकिन संकोच, दुविधा और अनजाने डर ने जुबान को बाँध रखा था । आँखें मिलती भी तो दोनों तुरंत नजरें फेर लेते, जैसे कोई अपराध करते रंगेहाथ पकड़े गए हों ।

दूसरा साल भी ऐसे ही गुजर गया, कहानी में कोई रोमांचक ट्विस्ट नहीं आया । पर इतना जरूर हुआ कि दोनों अपने नोट्स एक्सचेंज करने लगे । एक बात और हुई ।नाम की शुरुआत समान अक्षर से होने के कारण वर्कशाप और डम्पीलेवल सर्वे प्रैक्टिकल में दोनों ही पार्टनर बना दिए गए। फाउन्ड्री शाप में मोल्डिंग के लिए पैटर्न बनाना और वेल्डिंग करना प्रभजोत को सबसे कठिन काम लगता । पवन कोशिश करता कि वह प्रभजोत के हिस्से का भी काम कर दे। लकड़ी के पैटर्न बनाने का काम वह करता और प्रभजोत उनपर कट लगाने और कोर्स फाइलिंग का काम करती। उस दिन प्रभजोत और पवन, दोनों ने ही खुद को अजीब स्थिति में घिरा पाया । दोनों ही एक दूसरे से नजरें चुरा रहे थे। एक डरावनी चुप्पी दोनों के बीच पालथी मारकर बैठ गई थी। कैसे हैं सर भी,

बोलते हुए जरा सा भी संकोच नहीं किया और न ही नैतिकता का ख्याल किया। हाथ में एक टू पीस पैटर्न लेकर आए और दोनों को दिखाते हुए बोले - प्रभजोत आज तुम इस तरह का मेल ज्वाइंट और पवन तुम इस तरह का फीमेल ज्वाइंट पैटर्न बनाओगे, साइज में आधे सूत का भी अंतर नहीं होना चाहिए , ज्वाइंट करने पर दोनों परफेक्टली फिट होना चाहिए । सर काम सौंप कर मोल्डिंग शाप में चले गए, पर दोनों को अजीब दुविधापूर्ण स्थिति में डाल गए । मेल ज्वाइंट पैटर्न हाथ में पकड़े

कहानी

प्रभजोत नजरें जमीन में गड़ाए पता नहीं किस सोच में डूब गई थी । पवन को भी कुछ सूझ नहीं रहा था कि क्या बोले ? उसके मन में पैटर्न को मेल और फीमेल ज्वाइंट नाम देने वाले के प्रति गुस्सा उमड़ रहा था .. निश्चित ही बड़ा ही घटिया आदमी होगा वह, जिसने ऐसे नाम रखे ।

पवन उस दिन अचानक पेट में दर्द उठने का बहाना बनाकर वर्कशाप से चला आया ताकि प्रभजोत अपना जाब पूरा कर ले । तीसरे साल से दोनों की कक्षाएँ अलग होने वाली थीं । पवन सोच कर परेशान था फिर सहसा उसने एक ऐसा निर्णय ले लिया कि सारे हैरान रह गए । प्रिंसिपल से अनुरोध कर उसने अपनी ब्राँच सिविल से इलेक्ट्रिकल करवा ली । उसके इस निर्णय से कुछ साथियों ने पहली बार प्रभजोत के प्रति उसके लगाव की गर्माहट को महसूस किया ।उसके रूममेट नें तो नाराजगी जाहिर करते हुए कहा भी था -तुम दीवाने हो गए हो .. इस दीवानगी में तुम अपना कैरियर दाँव पर लगा रहे हो इसके बाद रत्नेश ने भी उसे बहुत समझाया था कि सिविल ब्रांच छोड़कर तुम बहुत बड़ी गलती कर रहे हो, बादमें बहुत पछताओगे।

साथ पढ़ते हुए दो साल और बीत गए। दोनों के बीच नजदीकियाँ बढ़ी भी और नहीं भी। दोनों कैम्पस में अक्सर साथ दिखते और खूब बतियाते भी लेकिन जब दिल की बात कहने का अवसर आता तो अधर मौन हो जाते । आँखों में स्पष्ट पढ़ी जाने वाली भाषा को दोनों ही शब्द देने में कृपण हो जाते। जुबान मौन रहे तो मन के कोमल भाव भी अन्दर ही अन्दर सिसकते रह जाते हैं । बीज को भी अंकुरित होने के लिए हवा, पानी और रोशनी चाहिए होती है फिर ये तो प्रेम का बीज था जो चार सालों से रोशनी की आस में लहलहाने की राह देख रहा था ।

इन चार सालों में अनेक अवसर ऐसे आए थे जब दोनों का एक-दूसरे के प्रति अनन्य लगाव सामने आया था । पहले ही साल पवन एक सीनियर से केवल इस बात पर भिड़ गया था कि उसने प्रभजोत के हेयर क्लिप को लेकर कमेंट कर दिया था । बहुत सामान्य सी बात थी लेकिन पवन को नागवार गुजरी थी। बदले में सीनियर्स ने उसे कमरे पर बुलाकर रात भर उसकी रैगिंग ली थी।

थर्ड ईयर की बात है, इलेक्ट्रिकल ड्राइव्स और ट्रैक्शन सिस्टम के प्रैक्टिकल के दौरान मैग्नेटिक फील्ड में हाथ आ जाने के कारण प्रभजोत झटके से गिर कर बेहोश हो गई थी। उसे इस स्थिति में देखकर पवन सुध-बुध खो बैठा था। वह प्रभजोत का सिर गोदी में रखकर देर तक किंकर्तव्यविमूढ़ सा शून्य में निहारता रहा था द्य दूसरे लड़के प्रभजोत को होश में लाने का प्रयत्न करते रहे। उसी दिन शाम को वह प्रभजोत को लेकर डाक्टर को दिखाने भी गया था। दोनों के मन में डर था, एक-दूसरे से प्रेम का इजहार करने के बाद कहीं उनका रिश्ता उड़ान भरने के पूर्व ही जमीन पर औंधे मुँह न आ गिरे। पवन को शंका थी कि उसके घर वाले कभी भी प्रभजोत को स्वीकार नहीं करेंगे । लहसुन-प्याज तक से परहेज करने वाला उसका सनातनी परिवार कैसे अण्डे-माँस खाने वाले परिवार की लड़की को बहू बना कर लाने के लिए तैयार होगा । दोनों परिवारों की आर्थिक असमानता भी उसे अपनी भावनाएँ व्यक्त करने से रोक देती थी। जहाँ उसके पिताजी पण्डिताई के खानदानी पेशे से अपना पेट काटकर उसे इंजीनियरिंग कालेज में पढ़ा रहे थे वहीं प्रभजोत का परिवार शहर के सम्पन्न परिवारों में गिना जाता था जिनके पास फिएट कार और बजाज स्कूटर की एजेंसियाँ थी। प्रभजोत को भी आशंका थी कि उसका परिवार भी सिख बिरादरी के बाहर कभी उसका रिश्ता कबूल नहीं करेगा । दोनों इसी ऊहापोह से लड़ते हुए अपने मन को खोल कर एक दूसरे के सामने नहीं रख पा रहे थे ।

अजीब कशमकश थी ।दोनों को लगता कि वे एक दूसरे के लिए ही बने हैं, दोनों का जीवन एक दूसरे के बिना अधूरा है पर कैसे ये रिश्ता एक मुकम्मल मुकाम तक पहुँचे, दोनों ही नहीं समझ पा रहे थे। दोनों ने ही मन के इर्द-गिर्द मकड़जाल बुन रखे थे जिसमें उनके अंदर की भावनाएँ उलझ कर रह गईं थी। फायनल की परीक्षाएँ चल रहीं थी कि खबर मिली प्रभजोत की सगाई बटाला के सतविंदर से होने वाली है जिनकी वहाँ पर साइकिल बनाने की फैक्टरी है । सुनकर पवन को आघात लगा लेकिन उसने परिस्थिति को स्वीकारने में देर नहीं लगाई। प्रेम को लेकर वह फिलास्फर हो गया। प्रेम क्या केवल पाने का नाम है ? प्रेम तो त्याग का दूसरा स्वरूप है। प्रेम एक ऐसा वरदान है जो ऊपर वाला केवल निश्छल और निर्मल दिल वालों को देता है । प्रभजोत को उसने निर्मल मन से प्यार किया है, दिल की गहराईयों से चाहा है, अब उसी गहराई से उसके भावी जीवन के लिए मंगलकामनाएँ देने का समय आया है तो वह पीछे कैसे हट सकता है ? उसका प्रेम कमजोर नहीं है जो उसके लिए बेड़ियाँ लिए खड़ा हो । प्रभजोत के लिए वह अपनी सारी खुशियाँ समर्पित कर सकता है .. सब कुछ त्याग सकता है। वह ताउम्र इस प्रेम को दिल में सहेज कर रखेगा । प्रेम उसकी ताकत है कमजोरी नहीं,कई दिनों तक लगातार ऐसे ही भाव उसके मन में आते रहे।

अन्तिम पेपर के बाद जब दोनों मिले तो पवन ने उसे भावी जीवन की मंगल कामनाएँ देते हुए कहा - "तुमको बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएँ प्रभजोत"पवन ने दो-तीन दिनों तक यह कहने के लिए स्वयं को मानसिक रूप से तैयार किया था लेकिन हिम्मत इस मुहाने पर आकर जवाब दे गई।

कहानी

उसने तुरन्त मुँह फेर लिया और भीगी आँखों को पोंछने लगा। “और कुछ नहीं कहना तुम्हें” प्रभजोत की आवाज भी भीगी हुई थी। “बहुत कुछ कहना है प्रभजोत” पवन ने अपने मन को काबू में करते हुए प्रभजोत की ओर देखा “तुम कालेज से निकलते ही नए जीवन में प्रवेश करने जा रही हो .. मैं ईश्वर से तुम्हारे सुखद और इन्द्रधनुषी जीवन के लिए सदा प्रार्थना करूँगा”।बस यही कहना है, और कुछ नहीं, यह कहते हुए प्रभजोत का गला भर आया था। अपने जीवनसाथी के साथ सपनों में रंग भरते-भरते पुराने साथियों को भूल मत जाना, कभी-कभी याद करती रहना कहते हुए पवन का गला रुँधने लगा द्य अब उसे वहाँ रुकने में परेशानी अनुभव होने लगी थी, बड़ी मुश्किल से खुद को सँभालते हुए आगे कह सका मुझे आज ही गाँव के लिए निकलना है .. कुछ दिन अपने माँ बापू के साथ रहना चाहता हूँ .. रिजल्ट आते ही मुझे ज्वाइन करने भी तो जाना है फिर पता नहीं कब उनके साथ रहने को मिले।

पच्चीस साल पुरानी कितनी ही घटनाएँ पवन की स्मृति में साकार हो गईं थी द्य कितना अर्सा बीत गया लेकिन वह कभी प्रभजोत को भूल नहीं पाया, हर समय उसके प्रेम की जोत उसके भीतर जलती रही, हर समय उसकी प्रभा से उसका दिल आलोकित रहा आया। प्रभजोत हमेशा खुश रहे वह यही चाहता रहा। उसके बारे में जानने की कोशिश भी इसलिए नहीं की कि उसके वैवाहिक जीवन में उसके कारण कोई समस्या न खड़ी हो जाए।

पवन ने बिस्तर पर लेटे-लेटे ही घड़ी की ओर देखा। शाम के पाँच बज रहे थे द्य दोस्तों की बातें याद कर उसका सिर भारी हो गया था द्य दोपहर का खाना भी मिस हो गया था। कोई भी दोस्त उसे खाने के लिए बुलाने नहीं आया था। सब व्यस्त थे, किसी के पास उसके लिए टाइम नहीं था। उसे लगने लगा कि यहाँ आकर गलती की है उसने। लोगों के प्रश्नों ने उसे फिर अतीत की खाइयों में नीचे उतार दिया था द्य लोग नहीं समझ सकते उसके दिल को। इस भौतिकवादी समय में प्रेम की निर्मलता बची ही कहाँ है। प्रेम को वस्तु समझने वालों की दुनिया में प्रेम की परालौकिक परिभाषा को कौन समझना चाहेगा द्य अब उसकी इच्छा नहीं थी शाम के कार्यक्रम में जाने की, उसे सामने देखेंगे तो यार लोग फिर सुबह वाली बातें छेड़ देंगे।उसे अब चाय की तलब के साथ ही कुछ खाने की इच्छा हो रही थी। सब दोस्त कार्यक्रम स्थल की ओर जा चुके थे द्य वह चुपचाप कमरे से निकला। उसे याद आया कि कालेज के पिछले गेट के पास एक चाय का टपरा हुआ करता था। हो सकता है अब भी हो। वह पैदल चलते हुए पिछले गेट तक पहुँच गया। अब पहले जैसा टपरा तो नहीं था अपितु उसी जगह पर एक छोटा सा रेस्टोरेंट जरूर बन गया था। वह जाकर बैठ गया और एक प्लेट गरम-गरम मंगौड़े के साथ ही चाय का आर्डर दे दिया।

“सर, आप नए लगते हैं, क्या आप भी कालेज के प्रोग्राम के लिए आए हैं” ? मंगौड़े की प्लेट रखते हुए रेस्टोरेंट के मालिक ने पूछा। “हाँ” पहले यहाँ मानिक लाल का चाय का टपरा हुआ करता था .. जब हम पढ़ते थे तब अक्सर यहाँ घण्टों बैठते थे। मानिक लाल मेरे पिताजी थे उन्हें गुजरे छः वर्ष हो गए हैं, तबसे मैं ही यह रेस्टोरेंट चलाता हूँ। ओह .. तब तो तुम नीलेश या परेश में से कोई होगे? उसने सोचते हुए कहा बहुत छोटे-छोटे थे उस समय दोनों पाँच या छ साल के। आपकी याददास्त बहुत तेज है बाबू जी, मैं परेश हूँ, नीलेश सी. आर.पी.एफ. में कांस्टेबल है। परेश ने खुश होते हुए कहा - “आजकल कहाँ पर हैं आप”? “ मैं रामागुण्डम में हूँ आजकल .रायसेन के पास ही मेरा गाँव है, पर अब कोई नहीं रहता वहाँ ” लगभग सोलह साल हो गए जब गाँव आया था तब कुछ देर के लिए कालेज भी गया था और यहाँ भी आया था, तुम्हारे बापू से भेंट हुई थी, उस समय तुम दोनों स्कूल गए हुए थे। “बाबू जी आप रायसेन के हैं, एक मैडम भी यहाँ आती रहती हैं। पास के किसी गाँव में टीचर हैं”। वह भी अक्सर रायसेन के किसी गाँव की बात करती हैं, शायद मीरपुर .. कल ही वह यहाँ से मीरपुर गईं हैं, किसी मन्दिर के पुजारी की पुण्य तिथि पर भण्डारा करने परेश की बात ने पवन को बुरी तरह चौंका दिया। मीरपुर तो उसी का गाँव है, मन्दिर के पुजारी भी उसके पिताजी हुआ करते थे ।आज तारीख भी १८ अक्टूबर है . . उफ्फ ! बीते कुछ सालों में वह कितना खुदगर्ज हो गया है कि उसे यह भी याद नहीं रहा कि उसके पिताजी की पुण्य तिथि आज है ।लेकिन कौन है वह टीचर ? जो न केवल उसके पिताजी की पुण्यतिथि को याद रखती है अपितु उनकी स्मृति में भण्डारे का भी आयोजन करती है ।उस टीचर को जानने और उससे मिलने के लिए उसका मन व्यग्र होने लगा। उसके पिताजी से क्या रिश्ता है उसका ? क्यों जाती रहती है उसके गाँव वह ?उसने बहुत से प्रश्न परेश से किए लेकिन कोई समाधान कारक उत्तर उसे नहीं मिल सका। उसे अभी गाँव जाकर पता करना होगा .. सत्तर कि.मी. ही तो है गाँव। उसने

कहानी

परेश से कहकर बुलेरो की व्यवस्था की और चल दिया ।

रात के साढ़े नौ बजे थे । मन्दिर से सुन्दरकाण्ड के पाठ की स्वर लहरियाँ उठ कर वातावरण में रस घोल रहीं थी । पवन का दिल तेजी से धड़कने लगा द्य मन्दिर के पास गाड़ी रोक कर वह उतरा ।

पड़ोस में रहने वाले राम रतन काका मंदिर-प्रांगण के बाहर ही मिल गए । उसने झुक कर पैर छुए ।उन्होंने वहीं से आवाज दी "संतो देखो, मोनू बेटा आया है" वह अनसुना करते हुए मन्दिर के चबूतरे के सामने जाकर ठिठक गया । उसे लगा उसकी संज्ञाएँ जवाब दे रही हैं, वह बेसुध होकर गिरने वाला है । रामरतन काका, जो उसके पीछे-पीछे ही आ रहे थे, ने उसे सम्भाला "देख के बिटवा, अभी गिर जाते"

आरती समाप्त होते-होते दस बजे गए। सब लोग धीरे-धीरे अपने घर को जाने लगे द्य पवन कबसे इन क्षणों का इन्तजार कर रहा था। एक-एक पल सदी के समान गुजरा था इस बीच द्य वह एक झटके में मन्दिर की सीढ़ियाँ फलाँगते हुए प्रभजोत के सामने खड़ा था "प्रभजोत तुम .. यहाँ .. इस समय ..कैसे ? और तुमने ये क्या भेष धारण किया है ?" पवन को सामने देख कर प्रभजोत भी चौंक गई "कब आए? .. कहाँ हो आजकल"। "यूँ समझो अभी-अभी .. रामागुण्डम थर्मल पहृवर प्लांट में पोस्टिंग है आजकल"। पवन प्रभजोत को देखे जा रहा था और प्रभजोत उसे । हृदय इतना व्यथित तो उस समय भी नहीं हुआ था जब दोनों ने अपने रास्ते जुदा कर लिए थे।

अकेले आए हो ?

ये प्रश्न तो मुझे तुमसे करना चाहिए ..?

क्या तुमने शादी नहीं की? पवन की बात का उसने कोई उत्तर न देते हुए प्रतिप्रश्न किया ।

इच्छा ही नहीं हुई शादी की .. लेकिन तुम यहाँ कैसे .. तुम्हारे पति कहाँ हैं?

मैंने भी शादी नहीं की। प्रभजोत निर्विकार भाव से बोली ।

क्या ? तुम्हारी वो सगाई .. सतविंदर- पवन ने हकलाते हुए कहा। मैंने घर वालों को सब बता दिया था कि मैं सतविंदर को खुशियाँ नहीं दे पाऊँगी .. अपने हिस्से का प्रेम मैं किसी को दे चुकी हूँ ।सतविंदर समझदार निकले लेकिन मेरे घर वालों ने मुझसे सारे रिश्ते तोड़ लिए ।

मैं किस्मत वाली थी कि मुझे उसी समय एमपीईबी में जाब मिल गया । दो महीने वहाँ नौकरी की पर मन नहीं लगा । तभी टीचर की पोस्ट निकली और मैंने इंजीनियर की नौकरी छोड़ दी तथा टीचर बनकर बच्चों के बीच अपनी खुशियाँ तलाश लीं ।तुम अंदर से इतनी बहादुर हो कभी पता ही नहीं लगा। इतनी आसानी से तुमने घरवालों को कह दिया लेकिन मुझसे ....कैसे मर्द हो तुम ?प्रभकोत पवन की बात को बीच में ही काटते हुए बोली "तुम्हारे हिस्से का काम भी क्या मैं करती ? मैंने तो उस दिन कितनी बार तुमसे पूछा था पर तुम कुछ बोले ही नहीं ..कैसे समझती मैं? प्रभजोत का गला भर आया। आँसू ढुलक कर गालों पर झिलमिलाने लगे। "मुझे माफ कर दो प्रभजोत, मुझमें उत्तर देने की हिम्मत ही नहीं थी लेकिन उसके बाद मैं भी किसी और के बारे में कभी सोच नहीं पाया"। बहुत कमजोर था मैं, वास्तविकता से दूर भागता रहा। "मैं भी दोषी हूँ .. यही चाहती रही कि पहल तुम करो फिर मैं पीछे-पीछे चल दूँगी .. सामाजिक मर्यादाएँ मन पर इतनी हावी थीं अपनी-तुम्हारी खुशी ही भूल गई" । सच कहूँ प्रभो, मुझे डर था कि मेरे माँ बाबू जी तुम्हें स्वीकार नहीं करेंगे द्य उन्होंने जीवन में कभी प्याज भी नहीं खाई थी और न ही कोई सुख देखा था, सदा अभाव की जिन्दगी जीते रहे .. मैं उन्हें नहीं छोड़ सकता था। कितने गलत थे हम दोनों .. अपने ही बुने मकड़जाल में उलझे रहे, अपनी भ्रांतियों में जीते हुए दिल की पुकार भी सुन नहीं सके।

तुम अम्मा बाबूजी से कब मिली, उनने कभी तुम्हारे बारे में चिट्ठी में लिखा ही नहीं। किस्मत ने मिला दिया था उनसे .. नौकरी करते तीन वर्ष हो गए थे कि मुझे एन०एस०एस० का कैम्प लगाने इस गाँव में आना पड़ा। हमारा कैम्प मंदिर के पास ही लगा था द्य उस समय तक मुझे नहीं मालूम था कि ये तुम्हारा गाँव है। बाबू जी से मैं संध्या आरती के बाद मिली थी । बाद में अम्मा जी से भी मिली। दोनों के व्यक्तित्व में चुम्बकीय आकर्षण था, जो एक बार उनके निकट आई तो दूर नहीं जा सकी। तुम्हारी माँ तो प्रेम और त्याग की साक्षात देवीं थी पवन। त्याग का गुण भी तुम्हें उन्हीं से मिला है । मैं उसके बाद दो साल में कम से कम छः बार तुम्हारे गाँव आकर माँ-बाबू जी से मिली । हर बार एन०एस०एस० शिविर के लिए बच्चों को इसी गाँव में

कहानी

लेकर आती थी। सोचती थी इसी बहाने माँ-बाबू जी की थोड़ी सेवा कर लूँगी, पर मैंने कभी उनसे हमारा-तुम्हारा जिक्र नहीं किया . मैं कभी कमजोर नहीं पड़ी, उनसे भी कभी तुम्हारे बारे में नहीं पूछा। उन्होंने ही एक बार बताया था कि तुम किसी प्रोजेक्ट ट्रेनिंग के सिलसिले में एक साल के लिए जापान गए हो । वहाँ से लौटते ही वह तुम्हारी शादी करना चाहते थे .. किन्हीं शुक्ला जी की लड़की भी उनने पसंदकर रखी थी।

तुम्हें इतना सब पता है .. मुझे तो इस बारे में जानकारी ही नहीं है । जापान से लौटने के तुरंत बाद मेरी पोस्टिंग ऊँचाहार में दूसरी यूनिट की स्थापना हेतु कर दी गई । जिस दिन मुझे वहाँ जाना था उसी दिन दोपहर में बस-दुर्घटना में अम्मा-बाबू जी के निधन का टेलीग्राम मिला .. मैं सीधा गाँव

आ गया, अम्मा बाबू जी के अंतिम दर्शन भी न कर सका । किस्मत हमारे साथ हमेशा से खेल खेलती आ रही है .. किस्मत ने यहाँ भी मुझसे छल किया .. मैं दो वर्ष की एडवांस ट्रेनिंग के लिए कलकत्ता क्या गई, वाहे गुरु ने उसी समय माँ-बाबू जी को छीन लिया। मुझे तो उनकी मृत्यु की खबर भी दो साल बाद ही मिली। बहुत रोई, टूट गई थी मैं ..दोबारा मैंने अपने माँ-बाबू को खोया था .. तबसे उनकी पुण्यतिथि पर मैं हर साल यहाँ आती हूँ और उनकी याद में लगाए गए पोधों की छाँव में असीम आनन्द पाती हूँ। तुम इतना सब अकेले करतीं रहीं और एक मैं हूँ कि उनकी पुण्यतिथि की तारीख तक भूल जाता हूँ, मैं जीते जी कोई सुख उनको नहीं दे सका .. और प्रभजोत तुम ।

कुछ देर चुप्पी रही। पवन ने प्रभजोत का हाथ अपने हाथ में ले लिया। "तुमसे कुछ कह सकता हूँ"? "क्या"? "जो उस दिन नहीं कह सका था"। "मैं तो उसी दिन से तुम्हारे उत्तर की प्रतीक्षा में हूँ"। मैं अब भी पुराने विचारों की हूँ .. चाहकर भी माडर्न नहीं हो पाऊँगी, पहल तो अब भी तुम्हें ही करनी होगी।

पवन ने उसके मुँह पर ऊँगली रख दी द्य कुछ देर तक कोई कुछ नहीं बोला, बस एक दूसरे को निहारते रहे द्य दोनों के आलिंगन में बँधते ही सुदूर आसमान में मुस्करा रहा चौदस का चाँद भी अधिक देर तक वहाँ ठहर न सका और प्रभजोत द्वारा लगाए गए वृक्षों की ओट में चला गया । मौन अधरों का संगीत बजते ही मन्दिर में जल रहा आरती का दिया जो टिमटिमाने लगा था अपनी पूरी दीप्ति से रोशन हो उठा।

अरुण अर्णव खरे

भोपाल

कविता

बाँसुरी की तान

है विनय इतनी सुना दो बाँसुरी की तान मोहन
भक्ति का अपनी करादो आज अमृत पान मोहन
कामना सारी मिटा कर
मन मेरा निष्काम कर दो
नित रहूँ तेरी शरण में
यूँ सुपावन धाम कर दो
मेरे अधरों पर रहे हरदम तेरा गुणगान मोहन
गोपियों का चैन छीने
नैन रतनारे तुम्हारे
मुख पे घुँघराली लटें
घन जैसे अम्बर में हो कारे
काछनी सोहे कमर में, अधरों पे मुस्कान मोहन
रंग तेरे ही रंगू
दूजा न कोई रंग भावै
चढ़ गई कैसी खुमारी
नाम बस तेरा सुहावै
ये जगत नश्वर है सारा हो गया है भान मोहन
मैं न राधा मैं न मीरा
बन सकी ये जानती हूँ
प्रीत मेरी फिर भी उनसे
कम नहीं ये मानती हूँ
प्रेम का पथ है कठिन कर दो इसे आसान मोहन
है विनय इतनी सुनादो बाँसुरी की तान मोहन
भक्ति का अपनी करादो आज अमृत पान मोहन

रमा प्रवीर वर्मा

नागपुर, महाराष्ट्र

संस्मरण

मेरी यात्रा

घूमने का शौक आखिर किसे नहीं होता, अक्सर लोग समय मिलते ही कहीं न कहीं घूमने का विचार बनाने लगते हैं। कुछ लोग समय के अभाव में, तो कुछ लोग जानकारी, वही कुछ लोग पैसे के अभाव में बहुत सी मनमोहक जगहों को देखने वंचित रह जाते हैं। मुझे जैसे ही घुमने का मौका मिलता है उसे छोड़ता नहीं हूँ। इसी कड़ी में एक साथी के विशेष अनुरोध पर "बहु-विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी" में भाग लेने साधना स्थली, कुल्लू (हिमाचल) रवाना हुआ। अंदर से बहुत रोमांचित हो रहा था। हो भी क्यों नहीं जिसे किताबों, मानचित्रों टीवी, फिल्मों आदि में देखने,पढ़ने को मिलता था,उसे खुद यात्रा कर करीब से देखने, समझने जानने का मौका मिले गा।यूँ तो दिल्ली तक कई बार गया हूँ, पर दिल्ली से आगे जाने का यह पहला मौका था।

मैं पहले भागलपुर से प्रत्येक दिन खुलने वाली ट्रेन विक्रमशिला एक्सप्रेस से आनन्द विहार (दिल्ली) के लिए रवाना हुआ। प्राचीन काल के तीन प्रमुख विश्वविद्यालयों तक्षशिला, नालन्दा और विक्रमशिला में से एक विश्वविद्यालय भागलपुर में ही था, जिसे हम विक्रमशिला के नाम से जानते हैं। उसी विक्रमशिला विश्वविद्यालय के नाम पर इस ट्रेन का नाम पड़ा है। वहीं पुराणों के अनुसार भागलपुर का पौराणिक नाम भगदतपुरम् था। जिसका अर्थ है वैसा जगह जो की भाग्यशाली हो।आज का भागलपुर बिहार में पटना के बाद दुसरे विकसित शहरों में है।ट्रेन में बैठे खिड़की के द्वारा तेजी से भागते दृश्यों के साथ मन में लिए कई तरह की बातों को सोचते चला जा रहा था। सफर घर के बने पराठे, सब्जी, चुड़ा फ्राई,मिठाई के साथ करना था।गुफा के बाद पकौड़े-पकौड़े की आवाज से अंजान यात्रियों को भी पता चल जाता होगा कि जमालपुर आ गया। मैं तो अक्सर चलने वालों में हूँ, सो जर्रे-जर्रे से परिचित हूँ। 'जमालपुर में एशिया का प्रथम रेल इंजन कारखाना ०८ फरवरी, १८६२ को अंग्रेजों के द्वारा स्थापित किया गया था।' जमालपुर और बिहार का दुर्भाग्य है कि आजाद भारत में बिहार के नौ रेल मंत्री हुए लेकिन कारखाना के ढ़हते भविष्य को इनमें से किसी ने भी संजोने का प्रयास नहीं किया।

यह कारखाना कभी भारतीय रेल की नाक हुआ करती थी,आज अपनी बदहाली पर आंसू बहा कर अपने तारणहार की प्रतीक्षा में है। कारखाने के कारण यहां सभी ट्रेनें कुछ ज्यादा देर रूकती है। कुछ लोग इसका फायदा पकोड़े खाकर लेते हैं। पुरुष यात्री इसका आनन्द लेने ट्रेन से उतरकर प्लेटफार्म पर भी चले जाते हैं। परिवार के साथ सफर करने वाले यात्री ट्रेन में बैठे बैठे ही पकोड़े का स्वाद लेना उचित समझते हैं।मेरे बगल वाले सीट पर इसी तरह के एक परिवार चटनी के साथ पकोड़े बड़े मजे से खा रहे थे।उसमें से एक व्यक्ति पकोड़े को इतने आनंदित होकर खा रहे थे कि उस जगह बैठे अन्य यात्रियों को भी उस पकोड़े के स्वाद का एहसास करा रहा था।

जमालपुर से निकले के बाद ट्रेन चलती रही, रुकती रही, स्टेशन निकलते गये, यात्री चढ़ते रहे, उतरते रहे। ट्रेन बिल्कुल ठीक समय पर किऊल जंक्शन पहुंच गई।विक्रमशिला एक्सप्रेस अपने आदत के अनुरूप भागलपुर से क्यूल तक सभी स्टेशनों पर रुकते हुए,यूँ कहिए पटना तक के सभी स्टेशनों पर सवारी गाड़ी के तरह रुकते हुए बिल्कुल समय पर पहुँच जाना, सफर कर रहे यात्रियों के लिए सुकून देने वाली बात थी। झारखंड के गिरिडीह से निकलने वाली एक नदी का नाम किऊल है,जो बिहार के जमुई-लखीसराय जिले से गुजरते हुए गंगा में मिल जाती है। किऊल नदी लाल बालू के लिए बिहार में प्रसिद्ध है। पानी से अधिक बालू को लेकर इसकी महत्ता है।नदी के एक छोर पर लखीसराय है, तो दूसरे छोर पर किऊल स्टेशन है। किऊल स्टेशन का नाम इसी किऊल नदी से पड़ा। खैर जो भी हो किऊल तक दिल्ली जाने वाले लगभग सभी यात्री आ चुके थे और अपने-अपने जगहों पर बैठकर निश्चित नजर आ रहे थे। कुछ यात्री घर परिवार से दूर जाने के कारण उसकी यादों में खोये खोये से दिखाई दे रहे थे। मुझे यह अच्छा नहीं लग रहा था,मै उन्हें उनके घर- परिवार की यादों से निकालना चाहता था। यादों को निकाले के लिए मेरे दिमाग में कई तरह की बातें आ रही थी, इसमें राजनीति की बातें सबसे टिकाऊ और लम्बी लग रही थी, सो लगा मैं बीजेपी की तारीफ करने।फिर क्या था कई लोग बीजेपी के पक्ष में तो कई विपक्ष में बोलने लगा। विभिन्न तरह की बातें हो ही रही थी कि तभी मैंने कांग्रेस की बड़ाई कर दी। एक बार फिर से कुछ लोग कांग्रेस के साथ नजर आने लगे तो कुछ विरोध में।मैं अब कुछ देर के लिए चुप ही रहना उचित समझा,पर अन्य यात्रियों में जोरदार बहस होने लगी। इस बहस को कांग्रेस बीजेपी तक की सीमित रखना अच्छा नहीं लग रहा था। लगे हाथ लालू,नीतीश का भी तारीफ कर ही दिया मैंने।मेरा काम तो सिर्फ तारीफ करने का था, बाकी अन्य काम अन्य यात्री जोरदार बहस के साथ कर रहे थे।अब

यात्रा संस्मरण

बहस इस तरह से होने लगा कि मानों विधानसभा या संसद भवन में बहस हो रहा हो। मैं शांत होकर चुपचाप मजे लिए जा रहा था,कि तभी जमालपुर में बड़े स्वाद से पकोड़े खाने वाले व्यक्ति अपने बातों से इस बहस को वेस्वाद कर दिए! वे मेरे से सवाल भरे लहजों में बोले आप किस पार्टी से हैं,जो सभी पार्टियों का तारीफ किए जा रहे हैं और इन लोगों को आपस में लड़ाये जा रहे हैं? उस जगह बहस कर रहे यात्रियों का एका-एक मेरे तरफ ध्यान आ गया। मैं बस मुस्कुरा भर दिया। तब तक विभिन्न स्टेशनों पर रुकते हुए ट्रेन पटना पहुंचने ही वाली थी। बहुत देर से एक ही जगह बैठे-बैठे मेरे पांव भी चहल-कदमी करना चाह रहा था,सो वहाँ से उठ कर चला जाना ही उचित प्रतित हुआ।

बिहार के दूसरे बड़े शहर भागलपुर से यात्रा प्रारंभ करने के बाद मैं अब बिहार के सबसे बड़े शहर राजधानी पटना में था। कहा जाता है कि 'पटना संसार के गिने-चुने उन विशेष प्राचीन नगरों में से एक है जो अति प्राचीन काल से आज तक आबाद है। पूर्व रेलवे ने १ अक्टूबर १ ९ ४८ को एक विशेष रूप से तीसरी श्रेणी के एक्सप्रेस ट्रेन को 'जनता एक्सप्रेस' के रूप में चलाना शुरू किया था। यह शुरू में पटना और दिल्ली के बीच चल रहा था और बाद में इसे १ ९ ४ ९ में दिल्ली से हावड़ा तक बढ़ा दिया गया था। यह भारत में पहली जनता एक्सप्रेस ट्रेन थी।'

शाम के ६:०० बज चुके थे, ट्रेन पटना से खुल चुकी थी। पटना तक सवारी गाड़ी के तरह चलने वाली विक्रमशिला एक्सप्रेस सही मायने में पटना के बाद ही एक्सप्रेस का रूप धारण करती है।भागलपुर से दिल्ली तक २१घंटों में(अगर समय से चले तो) सफर पूरा करने वाली विक्रमशिला एक्सप्रेस टोटल २१ स्टेशनों पर रूकती है, जिसमें से १८ पटना के पहले तो वही पटना के बाद मात्र दो मुगलसराय और कानपुर सेंट्रल स्टेशनों में रूकती है। ट्रेन में हुए इस बदलाव से साय साय की आवाज के अलावे कुछ और सुन पाना संभव नहीं था, अतः सभी लोगों को शांत होकर बैठ जाना ही ठीक लगा। कुछ लोग ताश के साथ तो कुछ लोग अपने मोबाइल के साथ व्यस्त हो गए। मेरा अपर बर्थ था सो मैं भी वहॉं जाकर अपने मोबाइल मैं व्यस्त हो गया। कुछ देर के बाद भूख की एहसास होते ही खाना खाकर सो गया। अगले दिन यानि ७ सितंबर २०१६ को लगभग ३ घंटे की लेट से मेरी ट्रेन आनंद विहार टर्मिनल में थी। मेरी अगली ट्रेन पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से शाम को ७:३५ में थी। आनंद विहार टर्मिनल से बाहर निकल कर पुरानी दिल्ली स्टेशन जाना के लिए बस पकड़ ली।

दिल्ली से आगे जाने की उत्सुकता मेरे उपर इस कदर हावी हो रही थी कि रात ९.०० दिल्ली स्टेशन आने वाली कालका मेल ट्रेन के लिए मैं दोपहर दो बजे ही प्लेटफार्म पर जाने लगा, वैसे भी बाहर रहकर समय नहीं कट रहा था। गेट पर जाते ही मुझे यह कहकर रोक दिया गया कि आप शाम ७.०० के पहले अंदर नहीं जा सकते हैं। मायूस होकर सात बजने का इंतजार करने लागा। कभी इधर जाता, कभी उधर जाता। समय उसके बाद भी कटते नहीं कटता। अब तो मोबाइल भी पावर की तलाश में व्याकुल हो रहा था। ६:०० बजे के आसपास एक बार पुनः प्लेटफार्म पर प्रवेश करना चाहा, इस बार किसी ने नहीं रोका। अंदर जाते ही मोबाइल चार्ज करने के लिए जगह की तलाश करने लगा। सामने खाली पड़े चार्जिंग पाइंट देखते ही झट से मोबाइल को चार्ज में लगा दिया। चार्ज में लगाते ही मेरे मोबाइल की पावर व्याकुलता तो खत्म हो गई, पर मुझे अभी भी इंतजार था अपने उस ऐतिहासिक ट्रेन जिसका नाम नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के साथ भी जुड़ा है। धनबाद और गया के बीच स्थित गोमो स्टेशन पर नेताजी इसी ट्रेन में १८ जनवरी,१९४१ को सवार होकर अंग्रेज हुकूमत की आँखों में धूल झोंककर गायब हो गए थे। हावड़ा कालका मेल भारतीय रेल की सबसे पुरानी ट्रेनों में से एक है। 'एक जनवरी १८६६ को कालका मेल पहली बार चली थी। उस वक्त इस ट्रेन का नाम ६३ अप हावड़ा पेशावर एक्सप्रेस था।' इस ऐतिहासिक ट्रेन के इंतजार में मैं कभी कुर्सी पर बैठ रहा था, तो कभी चहल कदमी करने लगता।इसी बीच में घोषणा की गई कि हावड़ा कालका मेल लगभग २ घंटे की विलंब से दिल्ली स्टेशन आये गी।घोषणा से मुझे कोई ज्यादा हैरानी नहीं हुई।भारतीय ट्रेनों की यह तो आदत सी है, उसके अनुरूप यह भी चल रही है।

हावड़ा कालका मेल २ घंटे की विलंब से रात्रि के ११ बजे खचा-खच भरे डिब्बों के साथ पुरानी दिल्ली स्टेशन प्लेटफार्म संख्या ५ पर आकर खड़ी हो गई। भीड़ देखकर लगा शायद आज आरामदायक सफर नहीं होने वाला है, पर वह भीड़ दिल्ली तक के लिए ही थी। बंगाल झारखंड बिहार उत्तर प्रदेश के यात्रियों को लेकर कालका तक जाने वाली कालका मेल के ज्यादातर यात्री राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में ही उतर जाते हैं।यात्रियों के उतर जाने के बाद मैं -७ के ३६ नंबर सीट पर अभी बैठा ही था, कि तभी एक सुंदर सी लड़की कर्कश आवाज में बोलती है "हटिए यह सीट मेरा है।" यह बोलकर वह अपने साथ लाए हुए बहुत सारे सामानों को सीट के नीचे रखने लगी। कोमल सी दिखने वाली पूर्णिमा के चॉद सा चेहरे के गोल मुख से झन्नाटेदार आत्मविश्वास भरे आवाज नें मेरे आत्मविश्वास में सेंध लगा दिया, और मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया कि कहीं मैं दूसरे ट्रेन में तो नहीं चढ़ गया। सोचते हुए बड़ी विनम्रता से बोला यह कौन सी ट्रेन है ? एक बार पुनः झन्नाटेदार आवाज मेरे कानों से स्पर्श होते ही मुझे मजबूर कर

दिया अपने सीट पर बैठे रहने के लिए। वे मेरे सवालों का जवाब देते हुए बोली 'ट्रेन का नाम तक नहीं पता और चले हैं ट्रेन में सफर करने वह भी दूसरे के सीट पर, हटते हैं कि टीटी को बुलाऊँ। यह ट्रेन कालका मेल है।और मुझे कालका जाना है।' इस बार मैंने भी थोड़े कड़े आवाज में कह दिया कि जाइए आप टीटी को ही बुला लाइये। वे तनतनाना के मुड़ी और टीटी को बुलाने चली गई। टीटी भाई साहब भी लगा बगल में ही थे, क्योंकि वे भी बड़े जल्दी आ गए। वे आते ही मेरे टिकट को बिना देखें उस सीट को छोड़ देने का फरमान सुना दिया। ऐसी स्थिति में मैं भी कहाँ रुकने वाला था? तपाक से बोल ही दिया, यह सीट मेरा है और कालका तक मुझे किसी को दम नहीं है उठाने का। मेरी बातों से टीटी भाई साहब को बुरा लग गया।वे कुछ बोलते इसके पहले वह लड़की अपने टिकट को दिखाते हुए एक बार फिर से वही कर्कश आवाज में कहती है, यह टिकट मेरा है, और मैं आपको अभी यहाँ से उठाऊंगी। आप उठकर यहाँ से जाएगें भी। तब तक मैं भी अपना टिकट निकाल चुका था। टिकट देखते ही टीटी भाई साहब उस लड़की पर झलाते हुए अपने डिब्बे में जाने को बोल कर अपने पुराने स्थान के लिए प्रस्थान कर गए। इस बात को सुनते ही वह अपने टिकट को गौर से देखने लगी। जिसमें साफ-साफ दिखाई दे रहा था, सीट नंबर तो वही है। पर डिब्बा एस-३ है। अब उस लड़की का उतरा हुआ चेहरा मुझसे देखा नहीं जा रहा था। अच्छा भी नहीं लग रहा था। इसी बीच मीठे आवाज में सहरी बोल कर वे वहाँ से जाने लगी। मैं उनकी परेशानियों को समझ रहा था। एक तो वह अकेले थी, उसके बाद बहुत सारा समान भी। एस-७ से एस-३ तक इन सामानों को ले जाते जाते उनको बहुत कठिनाइयों से गुजरना पड़ता। इसलिए मैंने फैसला किया कि क्यों नहीं मैं ही उसके सीट पर चला जाऊ। वैसे भी मुझे सोना ही था। मैंने उनसे कहा अगर आपको यहीं रहना है तो रह जाए। मैं आपके सीट पर चला जाता हूँ। उसने मेरे तरफ आशा भरी निगाहों से देखा। और कुछ छन में ही थैंकयू बोलकर मेरे जाने का इंतजार करने लगी। मैंने अपना बैग लिया और चल दिया एस-३ की ओर! अब ट्रेन भी पूरे रफ्तार में चल रही थी। मैं उसके सीट पर आकर बहुत सारी बातें सोचने लगा। सोचते सोचते पता ही नहीं कब आँख लग गई!

शेष अगले अंक में जारी

डॉ. आलोक प्रेमी भागलपुर
(बिहार) 9504523693

स्त्री

स्त्री.....
एक किताब की तरह होती है
जिसे देखते हैं सब,
अपनी-अपनी जरूरतों के
हिसाब से
कोई सोचता है, उसे
एक घटिया और सस्ते
उपन्यास की तरह।
तो कोई घूरता है,
उत्सुक-सा
एक हसीन रंगीन,
चित्रकथा समझकर
कुछ पलटतें हैं, इसके रंगीन
पन्ने,
अपना खाली वक्त,
गुजरने के लिए।
तो कुछ रख देते हैं,
घर की लाइब्रेरी में
सजाकर,
किसी बड़े लेखक की कृति की
तरह,
स्टेटस सिम्बल बनाकर
कुछ ऐसे भी हैं,
जो इसे रद्दी समझकर,
पटक देते हैं।
घर के किसी कोने में
तो कुछ बहुत उदार होकर
पूजते हैं मंदिर में,
किसी आले मे रखकर
गीता,कुरआन, बाईबिल जैसे,
किसी पवित्र ग्रंथ की तर्ज
स्त्री एक किताब की
तरह होती है, जिसे
पृष्ठ दर पृष्ठ कभी
कोई पड़ता नहीं
समझता नहीं,
आवरण से लेकर
अंतिम पृष्ठ तक
सिर्फ देखता है,
टटोलता है
और वो रह जाती है
अनबांची
अनअभिव्यक्त
अभिशप्त सी
ब्याहता होकर भी
कुँअरि सी...
विस्तृत होकर भी
सिमटी सी...
छुए तन में
एक
अनछुआ मन लिए।
सदा ही
स्त्री.....

दुर्गा कुमारी
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग
ति.मां.भा.विश्वविद्यालय

लेख

रोजगार के लिए हिन्दी

हिंदी हमारी राष्ट्र भाषा है, पर प्रश्न है कि क्या सचमुच ही हिंदी हमारी राष्ट्र भाषा बन पाई है ? इस यक्ष प्रश्न को अनुत्तरित छोड देने में विगत पीढ़ी के उन राजनेताओं की बहुत बडी गलती है, जिसके अनुसार हमारी संसद ने यह विधेयक पारित कर दिया कि जब तक देश का एक भी राज्य हिंदी को राष्ट्र भाषा के रूप में स्वीकार करने में अपनी तैयारी या अन्य कारणो से असमर्थता व्यक्त करें, तब तक हिंदी को अनिवार्य नहीं किया जावेगा। यही कारण है कि क्षेत्रवाद, भाषाई राजनीति, पक्ष, विपक्ष के चलते कानूनी रूप से हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा के रूप में आजादी के वर्षों बाद भी स्थापित नहीं हो पाई।

लोकतंत्र में कानून से उपर जन भावनायें होती है, विगत कुछ दशकों में बाजारवाद विश्व पर हावी हुआ है आज का युवावर्ग इसी बाजारवाद से प्रभावित है, जहां आजादी के दिनों में उत्सर्ग, देश के लिये समर्पण और त्याग की भावनायें युवाओं को आकृष्ट कर रही थी, वहीं वर्तमान समय में स्वंय की आर्थिक उन्नति, बढती आबादी के दबाव के बीच गलाकाट प्रतिस्पर्धा में येन केन प्रकारेण आगे निकलने की होड में युवा सतत व्यस्त है। आज कार्पोरेट जगत में युवा शक्ति का साम्राज्य है . विभिन्न कंपनियो के शीर्ष पदो पर अधिकांशतः युवा ही पदारूढ़ हैं . बाजार वैश्विक हो चला है।

अंग्रेजी वैश्विक संपर्क भाषा के रूप में स्थापित हो चुकी है, अतः आज युवावर्ग ने मातृभाषा हिन्दी की अपेक्षा अंग्रेजी को प्राथमिकता देते हुये अपनी अभिव्यक्ति व संपर्क का माध्यम बनाया है, त्रिभाषा फार्मूले के शीर्ष पर अंग्रेजी स्थापित होती दिख रही है। आंकडो में देखे तो हिन्दी का विस्तार हो रहा है, नई पत्र पत्रिकायें, किताबें, हिन्दी बोलने वालो की संख्या, विश्वविद्यालयों में हिन्दी पाठ्यक्रम , सब कुछ बढ रहा है। पर वास्तविकता से परिचित होने की जरूरत है, जर्मन रेडियो डायचेवेली ने हिन्दी प्रसारण बंद कर दिया है। बीबीसी ने हिन्दी के रेडियो प्रसारण बन्द कर दिए हैं ।

हिंदी पुस्तको के प्रथम संस्करणों में १०० से २०० प्रतियां ही छप रही है। हिंदी लेखकों को कोई उल्लेखनीय रायल्टी नहीं मिल रही है। हिदीं 'हिन्गलिश' बन रही है। मोबाईल पर एस.एम.एस हो या नेटवर्किंग साइट पर युवा वर्ग की चैटिंग, रेडियो जाकी की एफ.एम. रेडियो पर उद्घोषणायें हो या टीवी के युवाओ में लोकप्रिय कार्यक्रम, शुद्ध हिंदी मिलना दुष्कर है.गांव गांव तक हमारी फिल्मो व फिल्मी गीतो का युवा वर्ग पर विशेष प्रभाव है , अंग्रेजी मिश्रित हिन्दी शीर्षक की फिल्में , उनके डायलाग तथा हिन्दी व्याकरण को ठेंगा बताती शब्दावली के फिल्मी गीत अपनी तेज संगीत वाली धुनो के कारण युवाओ में लोकप्रिय हैं . आशा की किरण यही है कि यह सब जो कुछ भी है देवनागरी में है , सकारात्मक ढ़ंग से देखें तो इस तरह भी हिन्दी देश को जोड़ रही है, तथा विश्व में हिन्दी को स्थान भी दिला रही हैं .कार्पोरेट जगत के एम बी ए पढ़े लिखे युवा भले ही अंग्रेजी में गिटर पिटर करें या कार्पोरेट जगत का आंतरिक पत्र व्यवहार , प्रगति प्रतिवेदन आदि भले ही अंग्रेजी में हो पर जब वे अपने प्रोडक्ट की मार्केटिंग करते हैं तो उन्हें विज्ञापनो में हिन्दी का ही सहारा लेना पड़ता है , यह और बात है कि यह हिन्दी भी विशुद्ध न होकर जन बोलौ ही होती है।

हिंदी कविताओं की पुस्तके छपती है, पर वे विजिटिंग कार्ड की तरह बांटी जाने को विवश है, एवं लेखकीय आत्ममुग्धता से अधिक नहीं है। युगांतकारी रचना धार्मिता का युवा हिन्दी लेखको, कवियो में अभाव दिख रहा है। देश की आजादी के समय मिशन स्कूल, पब्लिक स्कूल एवं कावेंट स्कूलो के पास जो संस्थागत ताकत शिक्षण के क्षेत्र में थी, उसका हिंदी के विपरीत समाज पर स्पष्ट दुष्प्रभाव अब परिलक्षित हो रहा है । शिक्षा, रोजगार का साधन बनी, व्यक्ति की संस्कारों या सच्चे ज्ञान की वाहक अपेक्षाकृत कम रह गयी . रोजगार तथा बच्चो

काव्य

के सुखद आर्थिक भविष्य के दृष्टिकोण से स्वंय हिन्दी के समर्थक पालको ने भी अपने बच्चो को अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा देने में ही भलाई समझी इसके परिणाम स्वरूप आज की अंग्रेजी माध्यम से पढ़ी पीढ़ी सत्रह, इकतीस या उननचास नहीं समझ पाती, उसे सेवेनटीन, थर्टीवन और फोर्टीनाइन बतलाना पडता है , यह पीढ़ी अंग्रेजी में सोचकर भले ही हिंदी में लिख ले पर वह हिन्दी के संस्कारो से जुड़ नही पाई है । किंतु सब कुछ निराशाजनक ही नहीं है, एटीएम मशीन हो, या कम्पयूटर के साफ्टवेयर अंग्रेजी के साथ हिंदी के विकल्प भी अब सुलभ है, हिंदी शिक्षण हेतु नेट पर कक्षायें भी चल रही है, हिंदी ब्लाग प्रजातंत्र के पांचवे स्तंभ के रूप में स्थापित हो चला है,नित नये हिन्दी ब्लाग्स विविध विषयो पर देखने को मिल रहे हैं . यह सब हमारा युवा वर्ग ही कर रहा है, हिंदी में शोध करने वाले आज भी गंभीर कार्य कर रहे है, इसके दीर्घकालिक प्रभाव देखने को जरूर मिलेगें। आने वाले समय में आज का युवा ही हिंदी को किसी कानून के कारण नहीं, या उपर से थोपे स्वरूप में नहीं वरन् स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के बीच , अंतरमन से हिंदी की सरलता, सहजता के कारण तथा हिन्दी के भातर की जनभाषा होने के कारण व्यापक स्वरूप में अपनायेगा, हमारी पीढी इसी आशा और विश्वास के साथ हिंदी को बढ़ता देखना चाहती है।

सरकारी अनिवार्यता से ऊपर हिंदी को लेकर सबसे महत्वपूर्ण तथ्य जो सकारात्मकता जगाता है वह यह है कि आज हिंदी भाषी दुनियाभर में हैं । मतलब हिंदी किताबें , हिंदी मीडिया , हिंदी अनुवादक , हिंदी शिक्षक , हिंदी स्क्रिप्ट राइटर , हिंदी फिल्मों में कार्य के वैश्विक अवसर बने हुए हैं । सोशल मीडिया , इलेक्ट्रहनिक्स तथा कम्प्यूटर तकनीक ने हिंदी को वैश्विक बनाने में हिंदी फिल्मों से कम योगदान नही दिया है । आने वाला समय रोबोटिक्स तथा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का है । मेरी धारणा है कि आज यदि हिंदी में मौलिक खोज , मौलिक चिंतन व रिसर्च पर काम हो तो हिंदी रोजगार सहित आजीविका के संसाधनों के विकास में सहयोगी सिद्ध होगी ।

विवेक रंजन श्रीवास्तव 'विनम
जबलपुर मध्यप्रदेश

ब र ग द की छा या

बरगद की घनी छाया है पिता
छाँव में उसके भूलता हर दर्द।
पिता करता नहीं दिखावा कोई
आँसू छिपाता अन्तर में अपने।
तोड़ता पत्थर दोपहर में भी वो
चाहता पूरे हों अपनों के सपने।
बरगद की घनी छाया है पिता
छाँव में उसके भूलता हर दर्द।
भगवान का परम आशीर्वाद है
पिता जीवन की इक सौगात है।
जिनके सिर पे नहीं हाथ उसका
समझते हैं वही कैसा आघात है।
पिता का साथ कर देता सहज
मौसम कोई भी हो गर्म या सर्द।
पिता भी है प्रथम गुरूदेव जैसा
सिखाता पाठ है जीवन के सही।
दिखाता है कठोर खुद को मगर
होता है कोमल नारियल सा वही।
पिता होता है ईश्वर के ही सरीखा
झाड़ता जो जीवन पर से हर गर्द।

डॉ सरला सिंह "स्निग्धा"
दिल्ली

खुशी

21 साल बाद बनी दाढ़ी

छत्तीसगढ़ का एक महत्वपूर्ण शहर मनेंद्रगढ़ अब जिला बन गया है। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने इस बात की घोषणा की। इसके बाद से तो मनेन्द्रगढ़ में जैसे उत्सव का माहौल बन गया। पूरा शहर रंगों में नहा गया। होली और दिवाली दोनों एक साथ मनाई जा रही थी । लोग पटाखे फोड़ रहे थे,हर कोई एक-दूसरे को गुलाल लगा कर खुशी का इज़हार कर रहा था। वहीं एक शख्स ऐसा भी था जो अपनी बढ़ी हुई दाढ़ी साफ करवा रहा था । यह शख्स थे जाने-माने एक्टिविस्ट और जुझारू शख्स रमाशंकर गुप्ता, जिन्होंने सन २००० से अपनी दाढ़ी बढ़ानी शुरू की, इस संकल्प के साथ कि जब तक मनेंद्रगढ़ जिला नहीं बनेगा, वे दाढ़ी नहीं कटाएँगे। सन २००० में छत्तीसगढ़ बना। मगर मनेन्द्रगढ़ जैसे विकसित शहर को जिला नहीं बनाया गया। तभी रमाशंकर जी ने संकल्प किया कि अब उनकी दाढ़ी तभी कटेगी, जब मनेन्द्रगढ़ जिला बनेगा। देखते-ही-देखते गुप्ता जी की दाढ़ी बढ़ती गई..बढ़ती गई । लोगों ने हर बार आग्रह किया कि दाढ़ी कटवा लो, लेकिन गुप्ता जी नहीं माने।

वे अपनी जिद पर अडिग थे तो अडिग थे। और पूरे इक्कीस साल बाद आज १५ अगस्त २०२१ को उनका सपना पूरा हुआ। मुख्यमंत्री ने मनेंद्रगढ़ को जिला बनाने की घोषणा की तो रमा भैया के पास उनके मित्र, परिचित एकत्र होने लगे और बोले, '' भैया,अब तो दाढ़ी साफ करा लीजिए!" रमा भैया ने मुस्कुराते हुए कहा, " बिल्कुल, फौरन!" और उसके बाद नाई आया और सबके सामने रमा भैया की दाढ़ी साफ हो गई। तो यह था एक संकल्प, जो अपने लिए नहीं, नगर के लिए लिया गया था।

चालीस साल पहले मैं मनेन्द्रगढ़ से रायपुर शिफ्ट हुआ था पत्रकारिता करने ,लेकिन मेरी आत्मा हमेशा मनेंद्रगढ़ में ही विचरण करती रही। वहाँ की हसिया, हसदो नदी, मनेंद्रगढ़ का सिद्ध बाबा पहाड़, मनेंद्रगढ़ के लोग, सभी मेरी स्मृति में निरंतर बनी रहे । आज भी बने हुए हैं । जब कभी अवसर आता है, मनेन्द्रगढ़ जाने का मन होता है । जब कभी वहां के मित्र बुलाते हैं, दूसरे का काम छोड़कर चला चला जाता हूं। मनेंद्रगढ़ में मेरा बचपन बीता। वही मैंने प्राथमिक शाला से लेकर कहलेज तक की पढ़ाई की। साहित्य और पत्रकारिता का ककहरा मनेंद्रगढ़ में रहकर ही सिखा, इसलिए इस शहर से मेरा बहुत गहरा लगाव है । वर्षों पहले जब बैकुंठपुर को जिला बनाया गया, तब मनेंद्रगढ़ के लोग काफी दुखी हुए थे । जिला बनाने की मांग लेकर वर्षों तक आंदोलन चलता रहा। धरना, प्रदर्शन का लंबा सिलसिला चलता रहा। इस के बावजूद मनेंद्रगढ़ को जिला न बनाकर उसके साथ अन्याय किया जाता रहा। लेकिन मनेंद्रगढ़ के लोग कभी भी उग्र प्रदर्शन नहीं किया। उन्होंने शांतिपूर्ण प्रदर्शन करते हुए अपनी मांग जारी रखी। इस बीच रायपुर में रमाशंकर गुप्ता जी से निरंतर मेरी मुलाकातें होती रहीं। वे छत्तीसगढ़ के अनेक मुद्दों को मीडिया के सामने प्रस्तुत करते रहते हैं। जब कभी रायपुर में भेंट होती,तो मैं भी उनसे आग्रह करता कि दाढ़ी कटा लीजिए लेकिन वे अपना संकल्प दोहरा देते । तब मुझे मौन होना ही पड़ता। बहरहाल, आज मनेंद्रगढ़ जिला बन गया और रमा भैया के दाढ़ी साफ हो गई , यह भी एक उल्लेखनीय घटना से कम नहीं। बहरहाल, इस अवसर पर कुछ पंक्तियाँ बन गई, देखें,

जिला बन गया मनेंद्रगढ़,
मन में हर्ष अपार ।
करे तरक्की यह शहर ,
निशिदिन बारंबार।
वर्षों का था स्वप्न यह,
आज हुआ साकार ।
हसिया, हसदो के तट पर
आया नव- त्योहार।
और तरक्की होगी अब,
होंगे नूतन काम।
फैले मनेन्द्रगढ़ शहर का,
दुनिया भर में नाम।

गिरीश पंकज
रायपुर,छतिसगढ़

शिक्षक दिवस पर व्यंग्य

प्रिय शिष्य

सदा खुशहाल रहो!

मेरे प्रिय शिष्य जब मैं आपको पान ठेला में खड़ा देखता हूं तो ऐसा लगता है मेरे द्वारा दी गई शिक्षा सार्थक हो गई मेरा सीना गर्व से दो गुना हो जाता है जिस प्रकार किसी साधु के सामने कोई भक्त आशीर्वाद के लिये हाथ फैलाये खड़ा रहता है उसी प्रकार तुम पान के लिये हाथ फैलाये खड़े रहते हो,और जैसे ही साधु का आशीर्वाद तुम्हें प्राप्त होता है, तुम प्रसन्न होकर गन्तव्य में चल देते हो, उसी प्रकार जब तुम्हें पान प्राप्त होता है,तुम प्रसन्न हो अपने मुखार बिन्दु पर पीले-पीले दातों से चबाते हो तो मेरी तर्क बुद्धि यह सोचती है कि पान कुसंस्कार है और तुममें कुसंस्कार चबाकर नष्ट करने की क्षमता है, तुम अक्षम नही हो। जब तुम्हें गुटका मुंह में डाले हुए देखता हूं तो तुम्हारे संयम की में दाद देता हूं,तुम वास्तव में इंद्रजीत हो ।अरे कौन इंद्रिय संयमित होगा जो निवाला मुंह में रखे रहे , और बगैर निगले पीक करते हुए निकाल दे वास्तव में तुममें असीम इंद्रिय संयम है।

जब तुम्हें सिगरेट सुलगाने के लिए माचिस की तीली जलाते हुये देखता हूं तो, चिन्ता सी होती है कि कहीं तुम हिन्दुस्तान में आग लगाने तो नही जा रहे हो,पर जब सिगरेट सुलगाकर धुंआ उड़ाते हुये देखता हूँ, तो पर्यावरण प्रदूषण का जो नारा लगाते हैं उनकी मूर्खता पर तरस आता है तुम्हारी गहराईयों को मनन करने की क्षमता तो उनमें है ही नही। जिस प्रकार धुंआ आकाश में वायु में मिलकर विलीन हो जाता है। वायु में समाहित हो जाता है इससे तुम एकता का संदेश देते हो। तुम जब गलियों में इठलाते हुये चलते हो ऐसा लगता है कि आपको बाहरी जगत मिथ्या नजर आता है। जो कुछ है वह मैहूं, मैं ही सत्य हूं। यह देख मैं अति प्रसन्न होता हूँ।जब तुम सीटी बजाते हुये गलियों से निकलते हो,तो मुझे लगता है कि तुम वास्तव में योगी हो । नाद्य योग द्वारा श्वांस रोककर श्वांस को सीटी द्वारा निकालना एक योगी ही कर सकता है।जिसे तुम सड़क चलते ही कर लेते हो। उन योगियों को तो तुमसे विद्या सीखनी चाहिये।श्वांस प्रश्वांस की गति के तुम वास्तव में पारखी हो तुम योगी नही महायोगी हो। धन्य हैं आप और धन्य हूं मैं जिस ऐसे..शिष्य मिले।

मैं मानता हूं आपके घर में सुबह हो या शाम, दोपहर हो या रात पक्षियों के कलरव सी ध्वनि भोर की चहल-पहल सा वातारण हमेशा रहता है।तुम्हारे पिताजी जब चिन्ताहरण (शराब) लेकर आते हैं तो अलग ही माहौल रहता है। वे चिंता से मुक्त अपनी निर्विवाद शैली का प्रयोग करते हैं तो आप मूक बनकर देखते रहते हैं। आपमें जानने करने की क्षमता अतुलनीय है।निश्चत ही आप अपने पिता के पद चिन्हों पर जायेंगे।

दूसरों के बहकावे मैं आकर जब तुम आन्दोलन ,चक्काजाम, लूट, तोड़फोड़ करते हो, तो देश की प्रगति में बाधा की चिंता सी होती है पर यह सोचकर संतोष करना पड़ता है कि एक न एक दिन सभी को मिट्टी में मिलना है। यह शरीर नश्वर है इस नश्वर संसार में हम स्थाई दे भी क्या सकते हैं।समाज के लोग तुम्हें एवं तुम्हारी गतिविधियों को असामाजिक की संज्ञा देने से नही चूकते ।उनकी बातों पर ध्यान न देकर अपने लक्ष्य को लेकर चलने की तुममें क्षमता है, इससे पता चलता है कि तुम कितने आत्मविश्वासी हो।

मुझे याद है जब तुम एक-एक कक्षा में दो-दो, तीन-तीन बार फैल हो जाने के बाद भी लगातार पढ़ाई करने में नहीं चूकते थे,हिम्मत नही हारते थे,उस कक्षा को पास करने में भले ही कुछ साल लगे हों पर तुमने पढ़ाई नही छोड़ी मजबूरन तुम्हारे पिताजी ने तुम्हें अपने कारोबार में लगाने का फैसला किया,और जब तुम्हें स्कूल से निकालने आये तुम कितने शांत थे। स्कूल के सभी छात्र तुम्हें किन नजरों से देख रहे थे। उनके भावों को तुमसे अधिक और कोई नही समझ सकता आज स्कूल में तुम्हारे जाने के बाद असीम शांति कहां। तुम्हारे जो अनुयायी है वे भी स्कूल की गतिविधियों को तुम्हारे ही तरह लेते हैं।

आशा है आप आने वाली पीढ़ी के लिये कुछ नया कर दिखाने के लिये प्रतिबद्ध हैं। आपकी अनुपम निर्विवाद प्रवृत्ति आपके अनुयायियों के लिये पथ प्रदर्शक रहे। उन्हें अपनी दी हुई विद्या एवं अनुभवों का जायजा-जायका लेने-देने के लिये आप सक्षम है। अपने एवं दूसरों के लिये आप आनंद में परमानंद ढूढने के प्रयासरत हैं आशा है आप सफल होंगे। मेरा यह पत्र आपके एवं आपके अनुयायियों के लिये शायद प्रेरणा दायक हो। आप कुछ नया करें इससे पहले।

तुम्हारा असहाय शिक्षक

डा. रामकुमार चतुर्वेदी
सिवनी, मध्यप्रदेश

श्रद्धांजलि

ओ ,जाने वाले हो सके तो लौट के आना

कृष्ण जन्माष्टमी महापर्व यानी ३० अगस्त २०२१ सोमवार को परम श्रद्धेया श्रीमती राजेश्वरी दुष्यंत त्यागी भोपाल के तात्याटोपे नगर स्थित भदभदा विश्राम-घाट में पंचतत्व में विलीन हो गयीं ,इस अवसर पर मुखाग्नि उनके बड़े सुपुत्र श्री आलोक त्यागी ने दी ,उन्हें नम आंखों से बिदाई देने उनके परिवार जनों के अतिरिक्त कुछ साहित्यकार जिनमें दुष्यंत रचनावली का सम्पादन करने वाले वरिष्ठ आलोचक व साहित्यकार डह विजयबहादुर सिंह ,श्री रामप्रकाश त्रिपाठी ,एवम दुष्यंत स्मारक पांडुलिपि संग्रहालय के निदेशक श्री राजुरकर राज और आदर्श बहुउद्देशीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय (माडल स्कूल) जहां लंबे समय तक राजेश्वरी जी शिक्षिका रहीं उनके कुछ विद्यार्थी जैसे सुनील शुक्ला ,अशेष श्रीवास्तव उपस्थित थे।

राजेश्वरी जी को विद्यालय में कौशिक मेडम के नाम से जाना जाता था ,क्योंकि उनका नाम विवाह से पूर्व राजेश्वरी कौशिक था जो विवाह उपरांत त्यागी हो गया था ,बहुत ही कम बोलने वाली अपने काम से काम और नाहक की गपशप में मशगूल हमने उन्हें कभी नहीं देखा ,हाथ में हाजरी रजिस्टर या बच्चों की कापियां या पुस्तक दबाए वे क्लास में आतीं और पाठ पढ़ाना प्रारम्भ कर देतीं ,गौरवर्ण,छरहरी काया आंखों पर नज़र का चश्मा ,भव्य और दिव्य सरस्वती की मूर्ति सी त्यागी मेडम ,ना कभी किसी भी नाराज होतीं न फटकार लगातीं एक दम स्थिर सहज और शांत ,शायद यह स्थिति सन १९७५ में उनके पति दुष्यंत जी के आसामयिक निधन के कारण बनी हो वे उस विषाद की काली छाया से अंदर ही अंदर लड़ रही हों ,क्योंकि वर्ष १९७७ में उनसे हमारी मुलाकात हुई थी और दो वर्ष ही तो हुए थे दुष्यंत जी को उन्हें अलविदा कहते हुए।

वर्ष १९७९ की बात है माडल स्कूल की शालेय पत्रिका का प्रकाशन हुआ और जिसके सम्पादन का दायित्व त्यागी मेडम को बनाया गया ,और हमने भी अपनी एक टूटी-फूटी कविता मेडम के पास प्रकाशन हेतु जमा कर दी ,आपको आश्चर्य होगा इस कविता को पूरी तरह सुधार कर मेडम ने पत्रिका में प्रकाशित किया मेरी खुशी का ठिकाना नहीं था और यह हमारी पहली लिखी और प्रकाशित कविता थी 'हमारा वतन' जिसका शीर्षक था। इस कविता के बाद कक्षा के अन्य विद्यार्थियों की अपेक्षा हमारी त्यागी मेडम से निकटता बढ़ गयी हम स्कूल बाउंड्री के सामने उनके सरकारी निवास एफ- ६९ /८ दक्षिण तात्या टोपे नगर भोपाल, जो कि एक सरकारी आवास था पर कभी-कभार आने जाने लगे ,यहां दरवाजे पर दुष्यंत कुमार त्यागी ,सहायक संचालक भाषा विभाग की नेम प्लेट लगी थी , अब यह शासकीय आवास विकास के नाम पर यानी कथित ' स्मार्ट-सिटी ' की भेंट चढ़ गया जैसे ख्यात व्यंग्यकार शरद जोशी जी का घर और उनके नाम की सड़क काश ! यह घर न होकर धार्मिक स्थल होते तो मजाल यूँ मलबे के ढेर में तब्दील हो पाते,उस समय हमें न तो साहित्य की कोई समझ थी और न अधिक जानकारी और साथ ही दुष्यंत जी के महत्वपूर्ण साहित्यिक अवदान और उनके ऊंचे कद की ,हाँ बस इतना मालूम था कि मेम के

श्रद्धांजलि

पति बहुत बड़े साहित्यकार थे।

उस सरकारी आवास में दस बारह फिट की खुली जगह के बाद छोटा से बैठक का कमरा था जिसमें एक बहुत ही साधरण सा पलंग और चार कुर्सियां डली रहती थीं ,कमरे में दुष्यंत जी का चर्चित श्वेत-श्याम चित्र जो आज भी बहुत जगह प्रयुक्त होता है टँगा हुआ था साथ ही मेम के साथ उनकी युवावस्था का एक चित्र भी दीवार पर लगा हुआ था ,आज भी उस कमरे का दृश्य एक चलचित्र की भांति दृश्यमान हो उठता है। फिर जब स्कूल छूटा तो त्यागी मेडम भी कहीं छूट गयीं ,और लगभग दो दशक पश्चात १९८५ में कुछ साहित्यिक सक्रियता बढ़ी और कीर्तिशेष मित्र डह बाबूराव गुजरे ने करवट कला परिषद से जोड़ा तथा राजुरकर जी ने दुष्यंत संग्रहालय की स्थापना की तो एक बार पुनः उसी शासकीय आवास में त्यागी मेडम से भेंट होने लगी। अब तो हमारी समझ थोड़ी विकसित हो गयी थी सो हम दुष्यंत जी के बारे में भी मेडम से कुछ अनौपचारिक चर्चा कर लेते थे द्य दुष्यंत जी कब लिखते थे कैसे लिखते थे ,आचनक उन्हें क्या हुआ था आदि-आदि। कभी कुछ रफ कागजों ,पुरानी डायरियों में दुष्यंत जी का लिखा हुआ मेडम हमें दिखाती तो बड़ा कौतूहल होता ,और अपने भाग्य पर गर्व की हम इतने महान कालजयी रचनाकार के घर में बैठे हैं ,उनकी धर्मपत्नी अपनी शिक्षिका से बात कर रहे हैं और उनकी लिखी हुई रचनाओं को देख रहे हैं ,स्पर्श कर रहे हैं।

यूँ ही एक बार त्यागी मेम के घर उन्हें किसी साहित्यिक आयोजन का निमंत्रण देने मैं अपने मित्र डॉ बाबूराव गुजरे के साथ गया था ,मेडम तो अमूमन कहीं आया-जाया नहीं करती थीं ,परन्तु फिर भी हम उन्हें अपने कार्यक्रमों की सूचना दे दिया करते थे ,क्योंकि उन्हें हमारी साहित्यिक सक्रियता बहुत अच्छी लगती थी और वे मॉडल स्कूल के विद्यार्थी होने के नाते हमसे अतिरिक्त स्नेह भी करती थीं ,और हमें भी उनका सानिध्य अच्छा लगता था। मेम के साथ हम बात कर रहे थे कि हमारे सम्मुख चाय पानी लेकर कोई उपस्थित हुआ उन्होंने हम से नमस्ते की और चाय सामने रख दी। तब मैडम ने कहा- 'यह हमारी बहू मानू है बेटे आलोक की पत्नी ,यह कमलेश्वर जी की बिटिया है। हमने कहा जी मेडम हमें मालूम है क्योंकि उन दिनों दुष्यंत जी और कमलेश्वर जी की मित्रता के बारे में हमने सुन रखा था ,और बाद में दो मित्र समधी बन गए यह जानकारी भी हमें थी ,मानू भाभी भी बड़ी सहज विनम्र और उदार ,फिर जब भी हमारा मेम के घर जाना होता मानू भाभी से भी मुलाकात होती और आलोक जी से भी द्य हाँ वैसे भोपाल के किसी साहित्यिक आयोजनों में मेडम भले न जाती हों परन्तु वे दुष्यंत संग्रहालय के महत्वपूर्ण आयोजनों में कभी कभार समय निकाल कर अवश्य आतीं और साथ में आलोक भाई और मानू भाभी भी।

शायद वर्ष १९८४-८५ की बात होगी तब आकाशवाणी के युववाणी कार्यक्रम में पहली बार रचनापाठ का अवसर मिला होगा ,तब यहां युववाणी की कार्यक्रम अधिकारी मेडम की पुत्री अर्चना राजकुमार जी हुआ करती थीं ,एकदम ऊंची पूरी उन्नत ललाट गौरवर्ण और बहुत ही हँसमुख और व्यवहार कुशल,जिनका दुःखद निधन इंदौर रोड पर घटित एक भीषण कार दुर्घटना में हो गया था ,और एक बबूल के पेड़ से टकराई हुई गाड़ी उसमें टूटी हुई चूड़ियां और बिखरा हुआ सामान मैनें दुर्भाग्य से स्वयम देखा था,क्योंकि मैं उन दिनों बैरागढ़ के पास एक गांव बरखेड़ा सालम के प्राथमिक स्कूल में शिक्षक था ,और सुबह अपनी साइकिल से स्कूल जा रहा था ,और इस दुर्घटना स्थल के करीब से गुजरा तो आने जाने वाले राहगीर यहां रुक रुक कर काले रंग की अम्बेसडर क्षतिग्रस्त गाड़ी को देखते और आगे बढ़ जाते, मैं भी यहां रुका और देखा बाद में पता चला यह तो अपनी त्यागी मेडम की बिटिया और दामाद थे जिनका इस भीषण दुर्घटना में आकस्मिक निधन हो गया था ,इस भयानक वज्रपात से भी मेडम काफी टूट गयी थी।

आज सड़क से लेकर संसद तक आम से लेकर खास तक सब लोगों द्वारा दुष्यंत की ग़ज़लों को गाया जाता

संस्मरण

है , कहाँ तो तय था चारांगा हर घर के लिए,हो गयी है पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिए, मत कहो आकाश में कुहरा घना है,यहां दरख्तों के साये में धूप लगती है, कौन कहता है आकाश में सुराख हो नहीं सकता, एक चिंगारी कहीं से ढूंढ लाओ दोस्तो ,इस दिए में तेल से भीगी हुई बाती तो है.. जैसी गज़लें और उनके शेर किसको याद नहीं होंगे , वे आज के सबसे लोकप्रिय शायरों में से एक हैं और मीर ,कबीर ,ग़ालिब तुलसी जैसे ही आमजनों के कंठ पर विराजे हैं ,जो रचनाकार किताबों से मुक्त होकर वाचिक और श्रवण परम्परा से सहज रूप में बिना प्रयास के हमारे ह्रदय में विराजते हैं अगली पीढ़ी तक पहुंचते हैं वे ही तो कालजयी रचनाकार होते हैं ।

दुष्यन्त आम आदमी की आवाज हैं "साये में धूप " की उनकी हर ग़ज़ल आम आदमी की जुबान है हर आदमी की अपनी ग़ज़ल है ,दुष्यंत जी ने ग़ज़ल के अलावा भी बहुत कुछ लिखा है विविध विधाओं में उनकी 'एक कंठ विषपायी '(काव्य-नाटक) और मसीहा मर गया (नाटक) सूर्य का स्वागत,आवाजों के घेरे,जलते हुए वन्त का बसन्त (काव्य)छोटे-छोटे सवाल ,आंगन में एक वृक्ष, दोहरी ज़िन्दगी, (उपन्यास) मन के कोण (लघुकथा)सहित अनेक पुस्तकें हमारे सम्मुख हैं परन्तु दुष्यंत जी की चर्चा सिर्फ और सिर्फ एक कालजयी ग़ज़लकार और 'साये के धूप ' रचनाकार के रूप में होती है ।

दुष्यंत जी का एक हस्तलिखित पत्र(छाया प्रति) मेरे पास है जो उन्होंने तत्कालीन राजनेता मंत्री कवि कीर्तिशेष श्री विठ्ठलभाई पटेल को लिखा था अपनी नोकरी से परेशान हो कर अपनी नई पदस्थापना और स्थानांतरण के संदर्भ में बड़ा भावुक और मार्मिक पत्र जिसमें उन्होंने तत्कालीन सूचना और प्रसारण मंत्री श्री विद्याचरण शुक्ल से अपना काम करवाने का अनुरोध किया था पत्र पढ़ने लायक है ,और यह बताता है जो आदमी आपातकाल के विरोध में कलम चलाता है दूषित राजनीति को इतनी कड़वी फटकार लगाता है ,वही कभी-कभी अपने आपको व्यक्तिगत रूप से कितना कमजोर कितना असहाय अपने लेखन से एकदम परे व्यवहार करने और समझने लगता है । दुष्यंत को दुष्यंत बनाने वाली उनकी नेपथ्य की शक्ति आदरणीया राजेश्वरी जी को शत शत नमन ,विनम्र श्रद्धासुमन ...!!!

घनश्याम मैथिल 'अमृत' भोपाल

बेटा

बात यही कोई आठ साल पुरानी है एक गांव में एक किसान परिवार रहता था।परिवार में किसान, किसान की पत्नी और एक बेटा था, वे बहुत गरीब थे उनके पास ज्यादा खेत भी नहीं था घर भी नहीं था उनके पास एक जोड़ी बैल थे, छप्पर का मकान था दूसरों के खेतों में जुताई करके जो भी पैसे आते थे उसे घर का खर्चा किसी तरह चल रहा था, लेकिन एक अच्छी बात उनके परिवार की थे कि वे लोग संतुष्ट थे। और उनका बेटा पढ़ने में बहुत अच्छा था वही उस परिवार की एक उम्मीद थी कि बड़ा होकर पढ़ लिख के उनके बदहाली को दूर करेगा इसी क्रम में दिन बढ़ता जा रहा था ।

एक रात की बात है उस दिन बहुत घनघोर बारिश थी चारों तरफ अंधकार ही अंधकार था हर तरफ सिर्फ और सिर्फ पानी ही दिखाई दे रहा था अचानक रात को किसान उठा और उसने देखा कि उसका एक बैल जगह पर नहीं है किसान बहुत चिंतित हो गया उसने यह बात परिवार में बताई तो उसका बेटा बोला कि पिताजी आप चिंता ना करें मैं जा कर देखता हूं उसने टार्च और छाता उठाया और उस बारिश में बाहर निकल गया काल को कुछ और ही मंजूर था आगे बिजली के खंभे का तार टूट कर पानी में गिरा हुआ था अचानक बच्चे का पैर उस तार पर पड़ा और वह बच्चा कुछ ही समय में काल के गाल में समा गया उसकी चीखें इतनी भयंकर थी कि सारे गांव के लोग इकट्ठा हो गए पूरे गांव के लोग मूर्ति बने देखते रहे कोई कुछ भी करने में असमर्थ था कुछ ही पलों में वह बच्चा जलकर खाक हो गया किसान और किसान की पत्नी का रो-रो के बुरा हाल था पूरे गांव के लोग भी रो रहे थे क्योंकि वही एक उम्मीद थी.लेकिन मृत्यु के सामने किसकी चली है

सत्येंद्र पाण्डेय 'शिल्प'
गोंडा,उत्तरप्रदेश

हिंदी दिवस

हिन्द की हिन्दी और हिन्दी दिवस

हिन्दी भारत जन गण वाणी इसपर तन मन वारा है।
सूर जायसी पंत निराला सब ने इसे सँवारा है।
सरल वर्तनी शुद्ध व्याकरण, देवनागरी लिपि इसकी-
इसका करें विकास निरंतर यह संकल्प हमारा है।

१४ सितम्बर को हम हिन्दी दिवस के रूप में मनाते है , और यह न तो कोई त्यौहार है, न ही किसी महान आत्मा का जन्म दिवस, जो साल में एक बार आता हो , और ऐसा भी नहीं की साल में एक बार ही हमें हिन्दी की याद आती है। हिन्दी दिवस मनाने के पीछे हमारे नीति निर्माताओं का मानना है कि हिन्दी को सबसे बेहतर विकल्प रूप देना और पूरे देश को एक ही भाषा सूत्र में बांधना। आज हिन्दी के जो हालात हमारे हिन्दुस्तान में है उससे यह कहना गलत नहीं होगा कि, हिन्दी का आने वाले समय में स्वदेश में ही परदेशी वाली स्थिति बन जायेगी। आज हर परिवार अपने बच्चों को केवल अंग्रेजी ही सिखाने पर जोर देता है जिसका प्रमुख कारण आधुनिक तकनीकी तथा विदेशों में नौकरी के लिये पलायन माना जा सकता है। निसंदेह यह शर्म की बात है की हमारे बैंक , विद्यालय , रेल कार्यालय , पासपोर्ट कार्यालय , आयकर विभाग, तथा अन्य छोटे बड़े कल कारखाने सभी जगह अंग्रेजी ही संचार का माध्यम है। अब ऐसे में हम हिन्द में हिन्दी के भविष्य की क्या कल्पना करे। यद्यपि हिन्दी विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। ५.४ करोड़ से अधिक लोगों द्वारा बोली, पढ़ी-और -लिखी जाती है। एक ओर हमारी हिन्दी राजभाषा , सम्पर्क भाषा और विश्व भाषा बनने को ओर अग्रसर हो रही है, तो दूसरी ओर अपने ही देश में हिन्दी पल -पल अपमानित हो रही है।

हमारी हिन्दी यूरोपीय भाषा परिवार के अंदर आती है और हिन्द आर्य भाषा संस्कृत से उत्पन्न हुई हैं. प्रो. महावीर सरन जैन के अनुसार हिन्दी की उत्पत्ती अफगानिस्तान के बाद सिंधु के इस पार हिंदुस्तान के पूरे इलाके को प्राचीन फ़ारसी साहित्य में भी "हिन्द" ; "हिन्दुश' के नाम से पुकारा गया और बाद में यह हिन्दीक शब्द अरबी से होता हुआ ग्रीक में इन्दिके , इन्दिका , लैटिन में इन्दिया था अंग्रेजी में "इंडिया " बन गया. हिन्दी का स्वरूप शौरसेनी और अर्धमागधी अपभ्रंशों से विकसित हुआ है। १९९९ ई. के आसपास इसकी स्वतंत्र सत्ता का परिचय मिलने लगा था, और बाद में यही आर्य भाषाओं के रूप में उद्धृत हुई है ।

आज दुनिया में कुल कितनी भाषायें है इसका अनुमान मुश्किल है पर लगभग ५७९८ भाषायें है ,जिनमे ८९ फीसदी भाषा बोलने वालों की संख्या १ लाख से भी कम है और २०० ऐसी भाषायें हैं जिनको १० लाख से अधिक लोग बोलते हैं।भारतीय संविधान के अनुसार २२ भाषाओं को मान्यता प्राप्त है परन्तु आंकड़ों के अनुसार १२१ भाषायें बोली और समझी जातीं हैं, और ५४४ बोलियां हैं। सरकारी आंकड़ों के अनुसार देश में कुल भाषाओं संख्या ४१८ है जिनमे ४०७ प्रयोग में लायी गयी हैं जबकि ११ विलुप्त हो चुकी है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद ३५१ में स्पष्ट रूप से लिखा गया की सरकार का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार करे और उसका विकास करे । इस अनुच्छेद में यह भी कहा गया की हिन्दी के विकास के लिए हिन्द में 'हिन्दुस्तानी' और ८ वीं अनुसूची की १८ अन्य भाषाओं के रूप व पद को अपनाया जाय। देवनागरी लिपि में हिन्दी भारतीय संघ की भाषा है जबकि विभिन्न प्रदेशों की अपनी -अपनी सरकारी भाषायें हैं। अंग्रेजी भारतीय संघ की दूसरी राज्य भाषा है और इसका प्रयोग केंद्र सरकार गैर -हिन्दी भाषी राज्यों के साथ संवाद में करती है तथा यह नागालैंड , मेघालय की राजभाषा है। भारत का संविधान ११ भाषाओं को राष्ट्रीय भाषा का दर्जा देता है. इन सबमे हिन्दी का क्षेत्र विशाल है तथा हिन्दी की अनेक बोलियाँ (उपभाषाएँ) जैसे अवधि , ब्रजभाषा , बुंदेली ,भोजपुरी छत्तीसगढ़ी , कुमाउनी इत्यादी हैं। "स्वामी दयानंद"के अनुसार हिन्दी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

दुनिया भर में संरक्षण के अभाव और अंग्रेजी के वर्चस्व से सैकड़ों भाषायें समाप्ति के कगार पर हैं और ऐसे देशों की सूचि में भारत की स्थिति चिंताजनक है। भाषा विशेषज्ञों का कहना है की भाषायें किसी भी संस्कृति का आइना होती हैं और एक भाषा की समाप्ति का अर्थ है की

हिंदी दिवस पर विशेष

एक पूरी सभ्यता संस्कृति का नष्ट होना और इस स्थिति के कारण संयुक्त राष्ट्र ने १९९० के दशक में २१ फ़रवरी को अंतर्राष्ट्रीय मातृ भाषा दिवस मनाये जाने की घोषणा की थी। राष्ट्र के विकास में मातृभाषा व अन्य भाषाओं की महत्ता को रेंखांकित करने की दृष्टि से केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा मंडल ने फैसला लिया कि विद्यालयों में बोर्ड भाषाओँ के उपयोग को बढ़ावा दिया जायेगा। न सिर्फ हिन्दी बल्कि हमारी क्षेत्रीय भाषाओं का भी अपना महत्व है और वो हमारी ऐतिहासिक सांस्कृतिक धरोहर हैं जो अब धीरे धीरे विलुप्त होने के कगार पर है ।

आज हम अपनी रोज के काम काज और बोलचाल के प्रयोग से लेकर आधुनिक शिक्षा तथा प्रोद्योगिकी इत्यादि के क्षेत्र में अंग्रेजी का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करने लगे है ऐसे में वैश्विक स्तर पर जहां "ग्लोबिश " भाषा ने धूम मचाई है वहीँ स्थानीय भाषायें जड़ से कमजोर होने लगी हैं। चीन में चिंग्लिश , भारत में हिंगलिश , फ़्रांस में फिंग्लिश आदि मिश्रित श्रेणी की भाषों के बढ़ते संक्रमण के बीच दुनिया की कुल ५८९९ भाषाओं में से २४९९ भाषायें विलुप्त होने की कगार पर पहुँच गयी है। वैश्विक पटल पर अपनी प्रतिष्ठा को बनाये रखने के लिए हिन्दी भाषा को बड़ी चुनौती से गुजरना पड़ रहा है। आज हमें बहुत ही शर्म के साथ यह स्वीकार करना पड़ रहा है कि हिन्दी को हम बोलने और सरकारी/ गैर सरकारी दोनों ही तरह के काम में प्रयोग में लाने में खुद को हीन भावना से देखते है तथा अपने बच्चों को भी हम अंग्रेजी सिखाने और उसको अपनाने के लिए ही जोर दे रहे हैं। इन सबका प्रमुख कारण हिन्दी का जटिल स्वरुप और उसके प्रति हमारे समाज की लोकप्रियता का कम होना हैं। हिन्दी भाषियों ने अंग्रेजी के कुछ शब्दों को बहुत ही आसानी से अपने बोलचाल में धारण कर लिया है और कहीं न कही इन का हिन्दी अनुवाद भी कठिन और बोझिल सा लगता है. हमारा समाज , हमारी मीडिया , हमारी साधारण जीवन शैली सब आज अंग्रेजी को बखूबी अपना रही है और धीरे धीरे अंग्रेजी के कुछ शब्दों ने हिन्दी को कड़ी चुनौती दे दी है। इसका नतीजा यह है की हिन्दी का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया है।

आज हमारी राष्ट्र भाषा को किसी भी क्षेत्र में अपना सही स्थान नहीं मिल रहा। दफ्तर , बैंक स्कूल, इंटरनेट , हर जगह अंग्रेजी का वर्चस्व कायम है और कई बार तो अंग्रेजी नहीं जानने के कारण आवेदकों को रोजगार के अवसर भी गंवाने पड़ते है। आज हम अपनी हिन्दी तथा क्षेत्रीय भाषा को बोलने में भी हिचकिचाते है ,और अपने बच्चों को केवल अंग्रेजी ही सिखाना चाहते है क्योंकि आज के समय की मांग और विश्व स्तर पर रोजगार या अन्य किसी भी कार्य के लिए अंग्रेजी अनिवार्य है। आजकल स्कूलों में भी बच्चों को अंग्रेजी ही बोलने पर जोर दिया जाता है और यदि बच्चे हिन्दी का प्रयोग करते हैं तो उनको हिन्दी बोलने का जुर्माना भी भरना पड़ता है। ऐसे हालात में हिन्दी का भविष्य क्या होगा इसका अनुमान हम स्वयं ही लगा सकते हैं।

हिन्दी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का घर में कम प्रयोग होने का एक और कारण है प्रेम विवाह। क्योंकि प्रेम विवाह में दम्पति एक दूसरे की क्षेत्रीय भाषा नहीं जानते तब वह हिन्दी या अंग्रेजी को ही अपनी बोलचाल की भाषा में शामिल करते हैं और अपने बच्चों को विश्व स्तर पर रोजगार तथा अन्य प्रारम्भिक परीक्षाओं हेतु तैयार करने के लिए ग्लोबल भाषा की ही शिक्षा देते हैं। ऐसे में आज आने वाली पीढ़ी अंग्रेजी भाषा, अंग्रेजी साहित्यकारों के नाम तो जानती हैं पर भारत में रहते हुए भी वह हिन्दी तथा अपनी क्षेत्रीय भाषाओं से पूर्णतः अवगत नहीं है। अब चूँकि, हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है इसलिए हम सब हिन्दुस्तानियों का यह फर्ज बनता है कि हम हिन्दी को रोजमर्रा की जिन्दगी में शामिल करें और अपने बच्चों को अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी तथा अपनी क्षेत्रीय भाषाओं को भी बिना झिझक सिखायें ताकि आनेवाले समय में हम अपनी संस्कृति और अपनी धरोहर को बचा सकें।

आधार हिन्द की हिन्दी प्यारी, गंगा सी गतिमान।
माँ की ममता लोरी इसमें, गाते हम यशगान।
विपुल शब्द हैं भाव इसी में निहित मृदुल व्यवहार-
दिन प्रतिदिन उपयोग बढाओ, जग में दो पहचान।

पुष्प लता शर्मा
लेखा अधिकारी
इन्द्रप्रस्थ इंटरनेशनल स्कूल
नई दिल्ली

हिंदी दिवस

हम बनामा उन्हें

भाषा आंतरिक रूप से पहचान से जुड़ी होती है, और इसमें अक्सर एक राष्ट्र की पहचान शामिल होती है। एक सीमा, एक नाम, एक ध्वज, या एक मुद्रा के अलावा, जो एक देश को एक सम्मानजनक और अद्वितीय राष्ट्र बनाता है वह उसकी राष्ट्रीय भाषा है। दरअसल, राष्ट्रीय भाषा एक स्पष्ट संकेतक है जो किसी देश की राष्ट्रीय पहचान का प्रतिनिधित्व करता है। भाषा एक संवेदनशील मुद्दा है। यह एक राष्ट्र और एक व्यक्ति की विरासत का भी हिस्सा है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि राष्ट्रवाद अपने 'हम बनाम उन्हें' मानसिकता के साथ, यहां तक कि उन राष्ट्रों में भी माना जा सकता है, जहां बहुभाषिकता के परिणामस्वरूप, हम'और उन दोनों का एक ही मूल आबादी में अस्तित्व

है इन सवालों का जवाब देने के लिए, इस तरह के देशों के भीतर गतिशीलता के उदाहरणों को देखने में मदद मिलती है। यद्यपि भाषा एक सांस्कृतिक मार्कर के रूप में कार्य करती है, एक समूह जो एक समूह को एक साथ जोड़ता है, वह समूह पहचान का एक पवित्र पहलू भी है।

हमारे जैसे राष्ट्र में, जो ६ से अधिक भाषा-परिवारों की १६ से अधिक भाषाओं की एक मजबूत उपस्थिति बनाए हुए हैं, हमें अपनी विचार प्रक्रिया और संवादात्मक संस्कृति के साथ-साथ सूचनाओं को साझा करने के लिए कम से कम कुछ करीब मंच की आवश्यकता है ताकि हिंदी हमेशा बनी रहे हमारे देश में एक आवश्यक स्थिति।

वर्तमान समय में हम इस बात से इंकार नही कर सकते कि हिंदी के उपर दिन-प्रतिदिन संकट गहराता जा रहा है। तथ्यों और किताबी बातो के लिए यह ठीक है कि हिंदी हमारी राजभाषा है पर इस बात से हम सब वाकिफ है, हममें से अधिकांश लोग बड़े मंचों और स्थानों पर हिंदी बोलने से अलग भावशून्य या असहज महसूस कर रहे हैं। गांधी जी ने १६१६-१७ में हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने कि बात कही थी। जिस पर आगे चल कर १४ सितंबर १६४८ को काफी विचार-विमर्श के बाद, हिन्दी को राजभाषा के रूप में संविधान में जोड़ा गया। इस प्रकार हम १४ सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते आए हैं और हिंदी के उत्थान मे अपना योगदान देते रहे हैं और सदा देते रहेंगे।

इस लेख के साथ, हम "अनुभव सोम" के असाधारण चित्रण को साझा कर रहे हैं और "जयप्रकाश चौहान" की हार्दिक पेंटिंग-कला के साथ। दोनों युवा पीढ़ी के कलाकारों में से हैं, जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी नाम और प्रसिद्धि पा रहे हैं। उन्होंने इस विशेष दिन और "हिंदी" भाषा के प्रति अपनी विचार प्रक्रिया और सम्मान को चित्रित और अंकित किया है। क्या हम इस हिंदी दिवस के आगे हिंदी भाषा की प्रगति को राजभाषा की स्थिति से राष्ट्रभाषा में बदल सकते हैं?

प्रभू घोष
पूना महाराष्ट्र

लेख

महिला सशक्तिकरण कानून निर्दोष भी शिकार

"यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवता" अर्थात जहां नारी की पूजा होती है. वहां देवताओं का निवास होता है। नारी सम्मान और सशक्तिकरण का जैसा उदाहरण भारतवर्ष के पुराणों और ग्रंथों मैं देखने को मिलता है वैसा अन्यत्र किसी भी देश के साहित्य या ग्रंथों में देखने को नहीं मिलता। किंतु वक्त की विडंबना देखिए आधुनिक काल में आते-आते हमारे लेखकों की लेखनी में अंतर आता चला गया और उन्होंने नारी की दुख भरी दास्तान सुनाते हुए लिख दिया

"अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी"
आंचल में है दूध और
आंखों में पानी"

तो क्या हम यह सोचे आधुनिक युग की सुसंस्कृत पढ़ी-लिखी सर्वगुण संपन्न नारी इतनी कमजोर हो गई है?। कि वह अपने अधिकारों और स्वाभिमान की लड़ाई दूसरों को शारीरिक मानसिक आर्थिक और सामाजिक क्षति पहुंचाकर ही कर सकती है जबकि यह वह भारत है जहां की नारी अपने तेज और सतीत्व के बल पर रावण जैसे अहंकारी और शक्ति संपन्न व्यक्ति को भी तिनके की धार के बल पर परास्त कर सकती थी। वह अपने बाहुबल से इतनी बड़ी इतनी बड़ी अंग्रेज हुकूमत से दो-दो हाथ कर सकती थी।फिर भी इतनी शक्ति संपन्न नारी इतनी कमजोर निर्बल और बेचारी कब से हो गई कि हमारे संविधान में "महिला सशक्तिकरण" जैसा संशोधन पास करना पड़ा कारण चाहे जो भी रहा हो पर आज की वास्तविकता यही है कि आज की नारी उत्तरोत्तर उन्नति की ओर बढ़ते हुए भी निर्बल असक्षम और असहाय ही बनी रहना चाहती है। उसे पग-पग पर कानून का सहारा लेना पड़ता है।

आखिर क्यों?.. कहीं अपनी इस विषम परिस्थितियों के लिए वह स्वयं ही तो उत्तरदाई नहीं है क्या आपने कभी सोचा है कानून के रूप में नारी ने जो शक्ति प्राप्त की है कहीं भी उनका दुरुपयोग तो नहीं कर रही या यह बात नारी को खुद ही समझ नहीं आ रही क्यों कि यह कानून तो वास्तविक पीड़ित महिलाओं के लिए ही बनाया गया है.सच की लड़ाई लड़ना तो वाजिब है ।पर झूठे केसों ने से परिवारों और समाज की स्थिति बहुत विषम हो गई है परिवार टूट रहे हैं,बिखर रहे हैं, समाज में एक डर का माहौल व्याप्त है। मी.टू ,बलात्कार, घरेलू हैरेसमेंट, दहेज हत्या या प्रताड़ना जैसे लांछन ने अच्छे - अच्छे परिवारों और युवकों को हिला कर रख दिया है पूरे के पूरे परिवार की जिंदगी दांव पर लगी हुई हैं।

कोर्ट कचहरी के चक्कर लगाते-लगाते वह थक जाते हैं,सामाजिक प्रतिष्ठा धूमिल हो जाती है। यह ठीक है की कसूरवार को तो सजा मिलनी ही चाहिए।लेकिन इस प्रकार का अपराध किया गया हो तो. वह क्षमा के काबिल हो ही नहीं सकता।किंतु इसी के साथ यह भी एक कटु सत्य है कि अपने अहंकार ओर अपना वर्चस्व स्थापित करने की कोशिश में आज की नारी अपनी जिद के कारण झूठा केस लगाने से भी नहीं चूकती इसी कारण कोर्ट में आ रहे केसों की दर दिन- प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। जो नारी घर की इज्जत हुआ करती थी.आज कंधे से कंधा मिलाकर लिव-इन- रिलेशनशिप को स्वीकार कर रही है। "ठीक है!. यह उसकी अपनी कानूनी स्वतंत्रता है" फिर आखिर क्यों वह उसी कानून का दुरुपयोग करने में सबसे आगे है।क्यों सालों-साल साथ रहने के बाद उसे याद आता है कि जिस पुरूष के साथ वह रह रही है वह पुरुष उसको धोखा दे रहा है?..उसका शारीरिक शोषण कर रहा है।"आज से १० साल पहले फलां पुरुष ने उसकी तरक्की के बदले में उसका सेक्सुअल है, रेसमेंट किया था"। आप ही बताइए क्या किसी को बुला कर एक व्यक्ति बार-बार बलात्कार कर सकता है?.. चलो माना कि यह भी सच है तो क्यों लड़की के परिजन१०- २० लाख की रकम से लेकर अपना केस वापस ले लेते हैं ?..कानून की पेचिदगियों से बचने के लिए लड़के वालों का परिवार अपना मकान जमीन बेचकर या गिरवी रखा उसकी भरपाई करता है। क्या यह एक बहुत बड़ी सामाजिक विसंगति नहीं बनती जा रही?। पारिवारिक विघटन करने

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटसएप करें

में भी नारी ने कानून का दुरुपयोग करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है वह अपने परिवार और पति पर इतने घिनौने इल्जाम लगाती है कि आप पूरी तरह से सहानुभूति पूर्वक उसी का पक्ष सुनेंगे क्योंकि उसे पता है कोर्ट का निर्णय तो उसी के पक्ष में आना है विमेन-पावर (महिला सशक्तिकरण) का हथियार जो है उसके पास छोटी-छोटी बातों का बतंगड़ बना कर घर में कलेश मचा ना अपनी सुसंस्कृत अहंकारी आदत में शामिल कर लेती है।

बातें बहुत होती हैं.जैसे “तुम्हें घर में पैसे देने की क्या जरूरत थी,उनके पास कोई कमी नहीं है”। ”तुम्हारे माता-पिता की मेरे घर में कोई जगह नहीं है”यहां क्यों आये है?..लड़के के विरोध करते ही कानून का सहारा लेने खड़ी हो जातीं है।क्या यह सही है?.

कभी-कभी तो महिलाओं द्वारा कोई इतनी भयाक्रांत करने वाली बात कह दी जाती है कि हमें कहने-सुनने में भी संकोच लगता है।क्या यह मानवीयता पूर्ण व्यवहार है?..ओर इन्ही बातों को लेकर सुशिक्षित और जागृत नारी छोटी-छोटी बातों का बतंगड़ बनाती हुई कानून का सहारा लेकर तहस-नहस कर देती है परिवारों को झूठ की नींव पर खड़ी करती है। विध्वंस की इमारत और उसमें बराबर के साझीदार होते हैं उसके परिवार वाले जो लड़के से मोटी रकम की मांग के लिए लड़की को उकसाते हैं।

कोर्ट में आए केसों का अध्ययन किया गया तो पाया गया कि इन में से कई केस झूठे हैं।इन आश्चर्यजनक परिणामों को सामने लाने के लिए महिला वकील ज्यादा सामने आई ओर उन्होंने पुरुषों के पक्ष में खड़े होकर केस जीते भी इन महिला वकीलों ने यह हकीकत बाहर कर लाई कि सजा भुगत रहे पुरुष कि तो कोई गलती थी ही नहीं और ना ही उसके परिवार वालों की।

तो क्या यह कानून का दुरुपयोग नहीं है?.. जब ऐसे केसों की संख्या बहुत बड़ती हुई देखी गई तो जुलाई २०२१ में सुप्रीम कोर्ट द्वारा यह कानून पास किया गया जिसमें साफ-साफ लिखा है कि लिव-इन-रिलेशन और सेक्सुअल हैरेसमेंट के केसों में अगर कोई भी लड़की काफी लंबे टाइम बाद केस दर्ज कराती है और वह पढ़ी-लिखी भी है! नाबालिग नहीं है! तो इस अपराध की वह बराबर की जिम्मेदार है।

रेखा दुबे, विदिशा मध्यप्रदेश

व्यंग्य

व्यंग्य पकौड़ा

सितंबर महीने में एक हिंदी पखवाड़ा आता है जो कुछ हिंदी प्रेमियों के उच्चारण में हिंदी पकौड़ा मालूम होता है। वजह यह कि इस दौरान हिंदी की याद में कुछ समारोह आयोजित होते हैं जिनमें भाग लेने वालों को चाय के साथ पकौड़े बंटते हैं। वरिष्ठ व्यंग्यकार और हिंदी व्यंग्य के इकलौते इतिहासकार श्री सुभाष चंदर हिंदी दिवस, सप्ताह और पखवाड़ों के चहेते मुख्य अतिथि और स्थापित अध्यक्ष हैं। इस वज़ह से वे दिल्ली समेत देश के कोने-कोने में ऐसे कार्यक्रमों में मंच पर सुशोभित रहते हैं। अगर आप उन्हें आमंत्रित करें तो उनकी सेवा में पेश करने के लिए मैं एक विशेष प्रकार के पकौड़े की तजवीज़ करता हूं जिसकी रेसिपी नीचे बिखरी है।

सबसे पहले एक बड़ा प्याज़ सा गोल मुद्दा लें यानि जिसकी परतें उतारते चले जाएं तो भी आखिर में कुछ ना निकले। इसकी धज्जियां उड़ाकर इसमें कुछ विट का लहसुन और आयरनी का अदरक बारीक काटकर मिला लें। अब वक्रोक्ति की हरी मिर्च लंबे लंबे काट कर डालें। इस मिश्रण पर थोड़ा सरोकार का नमक और मजेदार चटपटे पंच का मसाला छिड़कें। इस रंग बिरंगे गड़बड़झाले को व्यंग्य शैली के बेसन में थोड़ा हास्य के पानी के साथ मिलाकर लुगदी सा बना लें। अब जैसे बन पड़े, उठा कर छोटे बड़े कहलमों के आकार में गढ़ लें और किसी समसामयिक तेल में तल लें। लज़ीज़ हिंदी व्यंग्य पकौड़ा तैयार है।

पर सुभाष जी को पेश करने के लिए थोड़ी और मेहनत करें। एक पुस्तकाकार प्लेट में आड़े तिरछे रख कर, जितने जुगाड हो सकें, भूमिकाओं की चटनी के साथ अपने आत्मकथा के छल्ले भी सजा दें। वैसे सुभाष जी ऐसे पकौड़े ग्रहण करने के लिए अपना निजी आलूचना तरीदार साथ रखते हैं पर आपका जी करे तो किसी से अपनी पसंद का आलूचना बनवा कर रख लें। साथ में उधारी समीक्षा की मीठी हरी मिर्च भी रख सकते हैं। मूड में आया तो सुभाषजी उन्हें भी चख लेंगे। मेरी गारंटी है कि इस पकौड़े को खा कर सुभाष जी मोगैंबो की भांति खुश होंगे। फिर उनकी तेज रफ्तार जुबान और पैनी हो कर आपके समारोह में धूम मचा देगी।

कमलेश पाण्डेय

कान्ति की ग़ज़ले

चाल है फरेब की, कर रहे प्रवंचना।
भूल खुद किया करें,और दें उलाहना।
गीत क्रान्ति के लिखें,कह रहे गलत सही
चाह मान की रहे, भा रही सराहना।
जो सुकून दान में, स्वार्थपूर्ति में कहाँ
प्रेम में जिएं मरें, प्रेम ही निबाहना ।
मोह लोभ में फँसे, घूमते यहाँ वहाँ
सार को गहो सदा, जन्म क्यों बिगाड़ना।
शांति अब अपार है, रोम-रोम रम रहे
है अगाध संपदा, राम की उपासना।

आजकल ये कौन सी धारा बही है ।
भावना की अब नहीं कीमत रही है ।
लोग कितने हो रहे हैं मतलबी से
स्वार्थ साधें कामना केवल यही है ।
जय-पराजय की यहाँ चौसर बिछी अब
नेह की दीवार तो लगता ढही है ।
साँझ ढ़लते ही घटा होती गहन कुछ
भर उठे हैं नैन पीड़ा अनकही है ।
कल्पनाएं ढूंढ़ने राहत लगीं अब
भाव का संसार ही लगता सही है ।

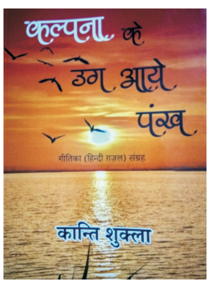

प्रतिफल की प्रत्याशा है ।
कैसी निश्छल आशा है ।
अवगुंठन संकल्पों पर
संतुष्टा अभिलाषा है ।
परिप्लावित आक्रोश प्रखर
फूली फली हताशा है ।
ईश धर्म धनवानों के
संशोधित परिभाषा है।
मन ने मन की बात सुनी
मूक प्रेम की भाषा है ।

हैं कबूतर पर झगड़ने चील तक गए ।
डूब मरने आँसुओं की झील तक गए ।
थे निशाना हम दबंगों के दबाव पर
खेत अपने ढूंढने तहसील तक गए ।
हो रहे कम वस्त्र तन से क्षोभ होता
आधुनिक के नाम पर अश्लील तक गए ।
सीप मोती खोज, थक कर रेत भर मुट्ठी
जीत क्या हम हार की तब्दील तक गए ।
जब अँधेरों से डरे होकर निराश तो
हम तडप कर आस की कंदील तक गए ।

तेजपुंज आदि शक्ति राष्ट्र- शान बेटियां ।
मातृ रुप सुख अनूप गेह -मान बेटियां ।
क्षोभ क्यों करे अगर मिली सुता जिसे यहाँ
गर्व से कहे कि गोद- स्वाभिमान बेटियां ।
शारदा सुरूप दिव्य ज्योति है कुमारिका
जो करो सनेह तो उदार जान बेटियां ।
हो रहीं सबल सफल सुज्ञान प्रेरिका प्रबल
सिंह सी गरज रहीं सुशौर्यवान बेटियां ।
पूजता जिसे जगत वही अपार शक्ति हैं
जुल्म फर्क क्यों करो कि सुत समान बेटियां ।

बेटी दिवस पर बेटियों को समर्पित

व्यंग्य

प्याज तेरा साथ

नया प्याज और् पुराना प्याज के भाव भी अलग अलग।पढ़े लिखे व्यापारी पेपर पढ़ते।उसमे बाजार भाव भी आते. उसको पढ़कर भाव लगाते।पहले प्याज के भाव आसमान पर हो गए थे। अब जाकर इतने कम हो गए कि लोग कहा करते है की 'कुछ ज्यादा ही भाव खा रिया था ' पहले गर्मी में यदि नकोली (नकसीर) होती तो उपचार स्वरूप प्याज फोड़ के सुंघाया जाता।लू लगने के डर से लोग जेब मे प्याज भी रखते थे।अब क्या रखे लगभग खुल्ला प्याज दस रुपये का एक किलों पड़ रहा है।जब भाव थे तब ग्रेवी में डाले जाने वाला प्याज न डाले जाने से ग्रेवी का स्वाद बेस्वाद हुआ जा रहा था ।पोहे में ऊपर से प्याज की जगह मूली को उपयोग में लिया जा रहा।किन्तु प्याज की बात ही कुछ और है।मुक्के से फोड़ कर प्याज खाने वाले परेशान उन्हें चाकू से कतरे हुए प्याज की एक रिप वो भी मांगने पर मिलती थी ।शाम को मयखाने में प्याज चखने में नही मिलने थे पर पियक्कड़ उदास।सब्जी भाजी में प्याज की पकड़ मजबूत है।प्याज के बिना सब्जियों के स्वाद की लोग बाग झूठी तारीफ करने लगे थे ।प्याज के भाव का रुतबा और् रिकार्ड ने तो सेवफल को पीछे छोड़ दिया।पहले प्याज खाते तो लोग बाग माउथ फ्रेशनर का उपयोग करते ताकि प्याज की बदबू नही आए।किन्तु जब भाव बढे थे तब प्याज लिया वो सबसे ज्यादा धनवान। प्याज के छिलके उतारने की कहावत अब महंगी होगईथी ।प्याज लाते तो अब बच्चें आसपास इकट्ठे होकर बड़े खुश होते और जोर से मम्मी को आवाज लगाते।मम्मी देखों पापा प्याज लाए।घर मे उत्सव का माहौल बन जाने लगा था ।प्याज सस्ता होने से घरों में प्याज की सब्जी लहक डाउन में बहुत फेमश हो रही है।प्याज की घरों में इज्जत और् ओहदा बढ़ गया।कभी प्याज - आँगन ,छत पर धूप खाने इधर उधर बिखरे पड़े रहते थे।

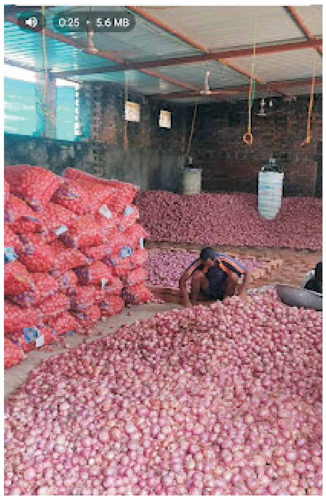

कुछ लोग प्याज नही खाते यदि भूल से प्याज नही लाए तो पड़ोसी से मांग लेते थे।अब संक्रमण के दौर में मांगने में झिझक होने लगी।जिस प्रकार बाढ़ के पानी का स्तर बढ़ता उसी प्रकार प्याज का भाव भी बढ़ता जा रहा।प्याज कतरने पर आँसू आते थे।अब भाव सुनकर सब रोने लगे।कही ऐसा ना हो फ़िल्म निर्माताओ को पटकथा ना मिले तो ये प्याज की पटकथा तैयार कर प्याज पर फिल्मांकन कर प्रदर्शित कर सकते है।।दुसरो को स्टोरी सुनाने के साथ का आनंद भी बता सकते है।महंगे होने से घरों में बिन पूछे यदि प्याज उठा लिया तो ग्रह युद्ध छिड़ जाता था. भले ही आप कमाकर लाते हो ।हुकूमत तो पत्नी की ही चलती है। क्या वाकई जिंदगी प्याज बिना अधूरी है?शायद स्वाद के रसिको के स्वर एक साथ उठेंगे -हाँ भई हाँ।

प्याज ने नाक में दम कर रखा है। हर सब्जी प्याज बिना अधूरी ,गर्मी में लोग जेबों में प्याज रखते थे ताकि लू के शिकार ना बने किंतु लहक डाउन में घर से निकलना ही नहीं तो जेब में प्याज का क्या काम ?फिर भी खाना खाते समय मुक्के से प्याज फोड़कर कई लोग इसे खाने की कला बताते है। गर्मी में सेव परमल ,सुबह नाश्ते में पोहे के ऊपर कटे प्याज अलग से डलवाना भी लोग पसंद करते है। आजकल प्याज खालो सामने वालों को इसकी गंध भी नहीं आएगी क्योकि मुँह पर तो मास्क बंधा जो है। लहक डाउन में दूरी का पालन करने से मंचीय कार्यक्रम -कवि सम्मलेन , साहित्यिक और अन्य कार्यक्रम बंद है। हर कोई अपनी प्रतिभा घर में ही दिखा रहा है। मोबाइल पर अह्नलाइन कवि सम्मेलन ,ज्ञानार्जन की बातें शेयर की जा रही है। जब कवि की कविता सुनाने का मोबाइल पर हिसाब से नंबर आया तो उनके कानों में बाहर ठेले वाला जिसके पास सब्जी बेचने का पास बना था वो आवाज लगा रहा था ।-सस्ते-प्याज ले लों ,आलू सब्जी ले लों ।.कवि की प्याज पर लिखी कविता का बाहर से और कवि की अंतरात्मा से जबरजस्त समर्थन मिल रहा था।बस वाह वाह नही निकल रही थी।क्योकि मुँह पर मास्क बंधा था।और माला भी दूरी की वजह से नही पहनाई जा रही थी।

संजय वर्मा'दृष्टि'
125,शहीद भगतलसग मार्ग
मनावर(धार) मप्र
9893070756

कहानी

वह पोस्टकार्ड

पता नहीं क्यूँ आज बार - बार उस बचपन की स्कूल वाली पेटी को देख रहा था, जिसे कभी हम स्कूल में अपनी कापी किताबों और पढाई के समानों के साथ जूनियर हाई स्कूल में अपना अपना ताला लगाकर रख आते थे। और पंडित जी के कहने पर अपनी समान रखी पेटी से संबंधित विषय की कापी किताब निकाल लेते थे। उस पेटी को आज मैं अपनी ५८ सालों की जिंदगी में क्यों याद कर रहा हूँ, पता नहीं? आखिर मैंने उस पेटी को खोला जिसमें आज से ३० सालों से भी ज्यादा पुरानी यादें मैंने सँभाल कर रखी थी। पुराने बचपन, किशोर और जवानी की यादें ताजा हो गईं। पुराने मित्रों के खत लिफाफे, अंतर्देशीय, पोस्टकार्ड रखे थे। मैंने एक पोस्टकार्ड उठा लिया। जिसमें एक सुंदर फूल के साथ दीपावली की शुभकामनाओं के साथ लिखा था, 'प्रिय मित्र, तुम्हारी बहुत याद आती है, न जाने क्यों?'

वह पोस्टकार्ड १९८८ में मेरे एक दोस्त के द्वारा लिखा गया था। मेरी पढाई पूरी हो गई थी और उसकी भी। मेरी शादी हो गई थी। उसने शादी नहीं किया था। मेरे कहने के बावजूद भी वह मुझे 'बारह डेढ़ अठारह पढ़ा दिया था।' और मैंने उसकी बात मान भी लिया था। कभी कभार उसके आग्रह से मैं उसके कस्बे में पहुँच जाता था। उसकी माँ का प्यार पाकर लगता इसने मुझे भी जन्म दिया है और मैं अपनी माँ को भूल जाया करता था। और जब वह मेरे घर आता तो मेरी माँ उसके चक्कर में मुझे ही भुला देती थी। वह कभी पराया लगा ही नहीं।

मैं और वह जब कालेज में पढ़ते थे। एक ही कमरे में रहते थे। वह मुझसे ज्यादा मुझे चाहता था। मेरे कोई सहोदर भाई नहीं थे। उसे पाकर मैं उस कमी को भूल गया था। भाई को तो हिस्सा के लिए लड़ते देखता हूँ, मगर उसने तो मुझे अपना हिस्सा ही दे दिया था। वह भाई से बढ़कर था। मैं जब भी उसके घर से अपने घर आने के लिए चलता, उसके माँ के आँचल की छाँव और आँखो से टप टप निकलते आँसू मुझे रोकते और मैं बार - बार माँ के चरणों में गिर कर माथा रख दिया करता था। और दिल पर पत्थर रखकर अपने गाँव आ जाता था। वह भी जब आता हफ्ते - दस दिन में जाता, तब मेरी माँ उसे आँचल में छिपा लिया करती और आँसुओं से वह भीग जाता और मेरे अम्मा बापू को बार - बार सिर धरकर चरणों में प्रणाम करता। मेरी माँ से आवाज नहीं निकलती सिर्फ और सिर्फ आँसू निकलते, लेकिन बापू भर्राई आवाज में कहते, "बेटा राकेश जल्दी आना!"

बापू लाख रोकते लेकिन फफक फफक कर रो पड़ते और राकेश समदरिया, मेरा दोस्त, मेरा भाई वह बापू से ऐसे लिपटकर रो पड़ता जैसे, मैं बचपन में उनसे लिपट जाता था। वह सिर्फ आँसू बहाता, हिचकी लेता लेकिन मुँह से कुछ भी नहीं बोलता। और मैं उसे साइकिल से १० किलोमीटर दूर सड़क पर ले जाकर बस में बैठाकर ऐसे लौटता मानो सारी संपत्ति लुटाकर लौटा हूँ।

मैं अपने परिवार के पास होता, फिर भी राकेश की याद रुला ही देती। मैं कितना पापी, कितना अभागा था। मुझे क्या पता था कि, यह पोस्टकार्ड उसका अंतिम पोस्टकार्ड होगा। उसने एक बार निश्छल भाव से कहा था कि, "यार, तू मेरी बहन से शादी कर ले, यह दोस्ती रिश्तेदारी में बदल दें, पता नहीं मैं कल रहूँ या न रहूँ। माँ और भाई भाभी के पास आना जाना तेरा बना रहेगा!" मुझे याद है कि, मैंने उसे बहुत डाँटा था। और कहा था कि, "तेरी बहन और मेरी बहन में अंतर बता। तू, पाप करवाना चाहता है। अरे यार दोस्ती से भी ज्यादा कोई और पवित्र रिश्ते हैं क्या?"

वह चुप हो गया था और मैं फूट फूटकर उस दिन रोया था। तब वह भी रो पड़ा था और दोनों कान पकड़कर माफ करने के लिए इशारे कर रहा था। मेरी घिग्घी बँध गई थी और मैं इतना ही कह सका कि, "अब मुझसे कभी मरने की बात मत करना!" उसने स्वीकार में सिर हिला दिया था। तब ऐसा सन्नाटा पसर गया था कि, सुई भी गिरे तो छानन की आवाज हो। हम दोनों बहुत देर तक ऐसे लिपटे रहे थे मानो दो नहीं हम एक हैं।

कालेज के दिनों में हर तरह की बातें हुआ

कविता

करती। हम कोई बात एक दूसरे से कहाँ छिपाते थे। कालेज में एक लड़की उसे बहुत चाहती थी, वह था ही ऐसा। मैं उन्हें मिलाने की कोशिशें करता, लेकिन मेरी कोशिशें बेकार हो जातीं और वह लड़की रो पड़ती। ऐसा लगता था जैसे वह मेरे मन की बात जानता था। मैंने एक दिन पूछ लिया, "राकेश, आखिर उसमें बुराई क्या है?" उसने मुझे चूमकर कहा, "अरे पागल, वह तो तेरी तरह मुझे प्यारी है, लेकिन अब न डाँटना मन की कह रहा हूँ, मैं कहने से तुझे डरता था, नहीं पहले ही बता दिया होता। मैं किसी की जिंदगी फिर प्यार की जिंदगी नहीं खराब करना चाहता हूँ! क्योंकि सच में मन कहता है मेरा कोई ठिकाना नहीं है!"मैं रो पड़ा और कहा, "आखिर तुझे ऐसी दकियानूसी बातें बताता कौन है मैं भी तो जानूँ!" वह चुप ही रहा। वह मेरे आँसू पोंछ पोंछकर मुझे चूमता रहा।

एक दिन तो उसने और गजब कर दिया था। उसने उस लकड़ी से स्पष्ट शब्दों में कहा कि, "सुमन, तुम इससे शादी कर लो मैं तुम्हें इसमें मिल जाऊँगा!" सुमन के दिल में क्या था, मैं नहीं जाना। लेकिन वह मुझे पगला लग रहा था, मैं उसे खूब डाँटा था, "पगला गए हो, मैं किसी की अमानत में खयानत नहीं बनता। फिर मेरी शादी तय है और वह मेरी पसंद है!" वह कुछ नहीं बोला, और मुस्करा कर गंभीर हो गया था। और दूसरी बातों में मुझे लगा दिया था। सुमन चली गई थी। मुझे उस दिन बहुत बुरा लगा था।

एक दिन वह सिगरेट का पैकेट लेकर आया और सिगरेट जलाकर एक मुझे दिया और खुद एक लिए रहा। मैं कुछ नहीं बोला। इसे क्या हो गया है मैं सोचते हुए उसके कश के उत्तर में एक कश मैं भी पिया।हम खा पीकर होमवर्क करके सोने की तैयारी में थे। दोनों जन की चारपाई जुड़ी हुई बिछती थी। कभी कभी साथ ही सो जाते। कभी मैं सो जाता और वह जागता रहता था।अचानक उसने कहा, "यार, मेरा सिर बहुत दर्द कर रहा है!"

मैं हड़बड़ाहट में उठा कि, दवा लाऊँ, कि, उसने हाथ पकड़कर खींचा और कहा, "पहले दबा दो!" मैं यन्त्रवत उसका सिर दबाने लगा। वह गंभीर था। कहने लगा, "तुझे, मेरे सिर की कसम है! अगर आज के बाद कोई भी नशा किया तो। जब कभी कोई खिलाए पान खा लेना, चाय पी लेना, लेकिन खबरदार आज के बाद नशा रूप में कुछ भी खाया, पिया तो!"

उस दिन वह मेरा दादा लग रहा था। मैंने हाँ में सिर हिला दिया था, आज्ञाकारी पोते की तरह। और आज भी निभा रहा हूँ। मैं अपनी दुनिया में, अतीत में गोते लगा रहा था, फफक फफक कर रो रहा था। मेरी हिचकियाँ बँध गई थीं, आँसू चेहरा भिगो रहे थे। वह पोस्टकार्ड धूमिल दिखने लगा था। मैं अनजान था कि, दो आँखों से और आँसू गिरने लगे हैं। मेरी पत्नी न जाने कबसे खड़ी थी। पत्नी ने आगे आकर मुझे सहलाया और आँचल से मेरे आँसू पोंछने लगी जैसे, मैं कोई बच्चा हूँ, मानो मैं सोते से जगा।

उस दीपावली के बाद ही वह अचानक काल के गाल में समा गया था। और साल में उसकी माँ भी चल बसी थी। पिता तो उसके बचपन से ही नहीं रहे थे। भाई और भाभी थे, सुमन भी ससुराल चली गई थी। राकेश और उसकी माँ अंतिम साँस मेरा नाम लेकर लिया था। मैं कैसे पता पाता, पहले मोबाइल फोन कहाँ थे। ५० किलोमीटर दूर से संदेश कैसे आता, तब बाइक भी नहीं थी, सड़क दूर थी।

आता था एक टेलिग्राम और मैं उनकी खाक ही देख पाया था। मुझे बहुत गमगीन देखकर पत्नी समझ गई और मुझसे बहुत ही आत्मीयता से कहने लगी, "जो नहीं हैं उनके लिए रोने से क्या फायदा! ऐसा करते हैं उनके लिए भी तीरथ करते हैं!" वह सब जानती थी। पता नहीं, बार - बार कहने से या, कोई अंदरूनी शक्ति के कारण मेरा अंग राकेश मुझे छोड़कर चला गया। पत्नी ने अपनेपन से कहा, "मैं इस पुरानी संदूक को फेंक दूँगी!" मैंने कहा, "ऐसी गलती कभी भूल कर मत करना, मेरे जीते जी!" उसने कहा, "मैं तो मजाक कर रही थी!"

मेरा दिल बहलाने के लिए उसने मेरे गले में बाहें डाल दी। और मेरे हाथ से मेरी पत्नी ने वह पोस्टकार्ड लेकर संदूक में रखकर फिर से ताला जड़ दिया। जैसे मेरी यादों को दफनाना चाह रही हो, फिर भी वह कभी दफन होने वाली नहीं हैं।

सतीश "बब्बा"
कोबरा, चित्रकूट

हिंदी दिवस एकांकी

14 सितम्बर

कक्षा का दृश्य -

शिक्षिका - सुप्रभात बच्चों ।

बच्चे- सुप्रभात शिक्षिका ।

शिक्षिका- बच्चों कल मैंने आपको भाषा से सम्बंधित कुछ जानकारी प्रदान की थी । आपने मातृभाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा आदि के विषय में जानकारी प्राप्त की । यदि किसी को कुछ पूछना हो तो पूछिए ।

छात्रा - शिक्षिका जी मैं यह जानना चाहती हूँ कि हमारे देश की राष्ट्रभाषा क्या है ?

शिक्षिका- बच्चों यूँ तो हमारे देश में २२ भाषाएँ बोली जाती है किंतु किसी भाषा को राष्ट्रभाषा की मान्यता नहीं दी गई है ।

छात्रा -पर शिक्षिका जी आपने तो बताया था कि जो भाषा देश के अधिकतर लोगों के द्वारा बोली और समझी जाती है उसे राष्ट्रभाषा कहते हैं और हमारे देश के अधिकांश लोग हिंदी भाषा ही बोलते हैं फिर भी हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा क्यों नहीं है ?

शिक्षिका- जैसा कि मैंने बताया१४ सितंबर १९४९ को संविधान सभा ने हिंदी को हमारी राजभाषा बनाया था। इसके साथ ही हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए महात्मा गांधी से लेकर जवाहरलाल नेहरू तक ने मुहिम चलाई, लेकिन वह सफल नहीं हो पाई। बच्चों इसके राष्ट्रभाषा न बनने के पीछे कई राजनीतिक कारण हैं।

छात्रा- क्या आप एक उदाहरण दे सकती हैं?

शिक्षिका- बिलकुल ।

छात्रा- शिक्षिका मैं कुछ बताऊँ ?

शिक्षिका- बोलो बेटा ।

छात्रा- मैंने कहीं पढ़ा था कि जब१९६५ में जब हिंदी को सभी जगहों पर आवश्यक बना दिया गया तो तमिलनाडु में हिंसक आंदोलन हुए। उनका कहना था कि यहां के लोग हिंदी नहीं जानते है इसलिए उसे राष्ट्रभाषा नहीं बनाया जा सकता।

शिक्षिका-यह सच है । आज भी दक्षिण और पूर्वी भारत के राज्यों में हिंदी कम बोली जाती हैं। भारत के २० राज्यों में हिंदी बोलने वाले लोग बहुत कम हैं। बच्चों भारत की कोई राष्ट्रभाषा नहीं है क्योंकि भारत में ढेरों भाषा बोली जाती है और सरकार ने देश की एकता और अखंडता को ध्यान रखते हुए हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा नहीं बल्कि राजभाषा बनाया।

छात्रा- शिक्षिका विश्व में प्रत्येक देश की एक राष्ट्रभाषा है । हमारे देश की कोई राष्ट्र भाषा नहीं है । क्या हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का किसी ने प्रयास नहीं किया?

शिक्षिका- आपको लोगों को यह जानकार आश्चर्य होगा कि हमारे देश के लोगों ने ही नहीं बेलजियम से आए फ़ादर कह्मील बुल्के ने हिंदी भाषा को समृद्ध और सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है ।

छात्रा -फ़ादर कह्मील बुल्के?? वे कौन थे ?

शिक्षिका- ये आप स्वयं ज्ञात कीजिए । अभी मैं केवल आपको उनकी एक विडीओ दिखा सकती हूँ ध्यानपूर्वक सुनना इससे सम्बंधित प्रश्न अगली कक्षा में पूछूँगी ।

विडीओ चलाया जाता है -

शिक्षिका- आपके मन में कोई प्रश्न है तो पूछ सकते हैं ।

छात्रा- मुझे समझ ही नहीं आ रहा कि हम हिंदी दिवस मानते क्यों हैं ?

शिक्षिका- हँसते हुए ठीक है फिर से सुनो । १४ सितंबर १९४९ को संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी को अंग्रेजी के साथ राष्ट्र की आधिकारिक भाषा के तौर पर स्वीकार किया। बाद में जवाहरलाल नेहरू सरकार

एकांकी/कहानी

ने इस ऐतिहासिक दिन के महत्व को देखते हुए हर साल १४ सितंबर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाने का फैसला किया। और पहला आधिकारिक हिन्दी दिवस १४ सितंबर १९५३ को मनाया गया था। स्पष्ट है?

छात्रा- शिक्षिका फिर तो हमें इस दिवस को उत्सव के रूप में मानना चाहिए ।

शिक्षिका- बिलकुल , आइए इस अवसर पर कुछ बच्चों द्वारा तैयार किए गए नृत्य का आनंद लीजिए और जिस गाने पर यह नृत्य तैयार किया गया है उसे भी हमारे विद्यालय की छात्राओ ने ही गाया भी है ।

और अंत में एक छोटा सा नृत्य

हिंदी की चली है लहर,

आओ मिलकर खुशियाँ मनाएँ ।

चाहे गाँव हो या शहर ,

हिंदी प्रेम की नादिया बहाए ।

मन के हर भाव को समझे ,

प्रेम से सबको गले लगाए ।

किसी भाषा से द्वेष न रखे ,

सबको हिंदी अपना बनाए ।

इसका मान बढ़ाना है ,

भारत की यह शान है ।

जग को यह दिखाना है ,

अनूठी अपनी पहचान है ।

जय हिंद , जय हिंदी

सीमा रानी मिश्रा
हिसार चंण्डीगढ़

वसुधा

वसुधा घर आते ही अपनी माँ से लड़ने लगी। पूरे रास्ते भर वह मुँह सुजा कर आई थी। घर आते ही फट पड़ी। ”नहीं चाहिए मुझे यह वाली साड़ी। कितना बोला मैंने मुझे वो १००० रुपये वाली लेनी थी । यह ६०० की मेरे माथे मढ़ दी। हुंह...”

दादी कितनी देर से वसुधा का बड़बड़ाना सुन रही थी। वसुधा जब काफी देर तक शान्त नहीं हुई तो दादी उसके पास जा कर बैठ गई। धीरे से उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगी। दादी के प्यार ने वसुधा को कुछ सांत्वना दी। वह दादी के कंधे पर सर रख कर सुबकने लगी।”देखो न दादी, माँ बिल्कुल नहीं समझती। मेरे आफिस में मेरा कोई रुतबा है। असिस्टेंट मैनेजर हूँ मैं, आप हो बोलो ऐसी सस्ती सी साड़ी पहन कर जाना अच्छा लगेगा क्या ? लोग क्या बोलेंगे...? मेरे मातहत तो कितने महंगे महंगे कपड़े पहन कर आते हैं।” वसुधा रो पड़ी।

दादी ने गहरी साँस ली। ”बेटा देख के मंत्री का रुतबा तो मैनेजर से ज्यादा होता होगा न?” अरे, वसुधा चिंहुक उठी, उनका रुतबा तो बहुत ज्यादा होता है, दादी। क्या बात करती हो?”बेटा, एक बार की बात है, तब शास्त्रीजी केंद्रीय मंत्री थे। उस समय के प्रधानमंत्री नेहरूजी उन्हें किसी जरूरी काम से कश्मीर भेजना चाहते थे। लेकिन शास्त्रीजी ने उन्हें कहा कि किसी और को उनकी जगह भेज दिया जाय। नेहरूजी ने उनसे इसका कारण पूछा। उन्होंने बड़ी विनम्रता से उत्तर दिया कि इस समय कश्मीर में बड़ी सर्दी पड़ रही है। मेरे पास गर्म कोट नहीं है। इसलिए आप किसी और को वहां भेज दें। नेहरू जी उनकी सादगी से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने बहुत आग्रह करके शास्त्री जी को अपना एक कोट दे दिया। चूंकि शास्त्रीजी छोटे कद के थे और नेहरूजी लंबे। इसलिए नेहरूजी का कोट शास्त्रीजी को फिट नहीं आया। इसलिए मजबूरी में शास्त्रीजी अपने एक मित्र को साथ लेकर नया कोट खरीदने बाजार गए। वहां उन्होंने बहुत सी दुकानें देखी। लेकिन कोई कोट पसंद नहीं आया। अगर कोई पसंद आता तो वह बहुत महंगा होता और सस्ता कोट उन्हें फिट नहीं आता। अंत में एक दुकानदार ने उन्हें एक दर्जी का पता दिया। जो सस्ते कोट सिलता था। शास्त्रीजी ने एक सस्ता कपड़ा खरीदा और सिलने को दे दिया। वापसी में उनके मित्र ने पूछा, ”आप केंद्रीय मंत्री हैं। अगर आप चाहें तो आपके पास कोटों की लाइन लग जाये।”। “फिर भी आप एक सस्ते कोट के लिए बाजार में मारे-मारे फिर रहे हैं।“ शास्त्रीजी ने उत्तर दिया, “ भाई मुझे इतना वेतन नहीं मिलता की मैं महंगा कोट पहन सकूं। मेरे लिए सभी सुख-सुविधाओं से बढ़कर देश सेवा है। जोकि मैं सस्ते कपड़ों में भी कर सकता हूँ।“

कहानी सुना कर दादी चुप हो गई और वसुधा के चेहरे की ओर देखने लगी। वसुधा मन ही मन शर्मिंदा हो रही थी। दादी, वसुधा ने धीमे स्वर में कहा, मैं समझ गई, हमारी प्रतिभा हमारे कपड़ों से नहीं हमारे विचारों और हमारे काम से प्रकट होती है। मुझे माफ़ कर दो।
दादी ने मुस्कुरा कर वसुधा को सीने से लगा लिया।

डा० प्रिया सूफ़ी
होशियारपुर पंजाब

कविता

कान्हा कान्हा

कान्हा कान्हा बोल रही हूँ
मैं तो तेरी राधा रे
मन मे तो बस तू बसता है
और न कोई भाता रे
गोकुल की गलियों में डोले
तू तो मेरा कान्हा रे
कान्हा कान्हा बोल रही हूं
मैं तो तेरी राधा रे
नंद के आंगन में डोले
तू तो है नन्दलाल रे
गोपियों के संग बृज में डोले
उनका प्यारा कान्हा रे
कान्हा कान्हा बोल रही हूं
मैं तो तेरी राधा रे
यशोदा की गोद मे खेले
माखन मिश्री में मन डोले
बलदाऊ का छोटा भ्राता
तू तो बृज का उजाला रे
कान्हा कान्हा बोल रही हूं
मैं तो तेरी राधा रे
मटकी फोड़े छेड़े सबको
नटखट नन्द को लाला रे
गोकुल की गलियों में डोले
गायों का रखवाला रे
कान्हा कान्हा बोल रही हूं
मैं तो तेरी राधा रे

रेनुका सिंह
गाज़ियाबाद

मीरा सी भक्तिन

बजाते कृष्ण हैं मुरली मगन गोकुल की गलियों में।
मधुर सुन तान वंशी की मची हलचल है" सखियों में।
चुराया चित्त राधा का मदन मोहन की मुरली ने।
प्रणय रस पी रही राधा कान्हा की डूब अँखियों में।
दुआ माँगू यही तुझसे हरो कान्हा मेरी बाधा।
बनूं मीरा सी भक्तिन मैं तुझी को प्राण में साधा।
न मेरी चाहत रुक्मणि-सी नहीं है चाह महलों की।
बनूं मैं प्रेम में रँगकर दिवानी मैं तेरी राधा ।
अधर मुरली धरी श्यामा गले वैजंती माला है ।

सुधा बसोर
गाजियाबाद

कान्हा जैसे पत्थर

तुम कान्हा जैसे पत्थर हो माना तुमसे कहा नहीं है।
फिर भी मेरे प्राणेश्वर हो माना तुमसे कहा नहीं है।।
हमने तो गुणगान किया प्रतिपल जोगन मीरा बनके
बाँची कुछ रहस्य लीलाएं जग में अपढ कबीरा बनके
इस गोपी के श्यामसुंदर हो माना तुमसे कहा नहीं है।।१
बहुत तपस्या की है हमने तब तव सुलभ हुए दर्शन ।
स्वाति प्रियतमा के चातक प्राणों को सुलभ हुए परछन।।
हो मरुथल के मेघसुहृदवर,माना तुमसे कहा नहीं है।।२
तुमसे सुन्दर कौन यहां है जग-उपवन तुमसे शोभित है।
ये गुलाब क्या भेजूँ तुमको ये भी तो तुमसे सुरभित है।।
तुम बसन्त सब तुम बिन पतझर माना तुमसे कहा नहीं है।।३
छंद,प्रबन्ध,सुगन्धित,पावन हम नित अर्पित करते हैं।
भाव प्रेम के सारे मालिक तुम्हें समर्पित करते हैं।
ऐ!पागल के निष्ठुर दिलबर माना तुमसे कहा नहीं हैं।।४

आर बी शर्मा पागल हरदोई

हमारी संस्कृति

हिंदी है तो हमारी संस्कृति ज़िंदा है। हिंदी हमारे हिन्द की पहचान है।राष्ट्र को गर्वान्वित करने वाली राजभाषा की प्रसिद्ध एक न एक दिन राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाकर ही रहेगी ये हमारे हिन्दवासियों, हिंदीप्रेमियों का विश्वास है। हिंदी दिवस तो ३६५ दिनों तक जीवंत रहने वाली भाषा है।हाँ हर नई पहल के लिए एक विशेष दिन होता है वही विशेष दिन १४ दिसम्बर माना गया है। यही एक ऐसी पवित्र भाषा है जिसमें तत्सम तद्भव का प्रयोग किया जाता है जो भाषा को आभूषित करते हैं।रिश्ते को आसानी से समझने में सक्षम भाषा ... जैसे चाचा की पत्नी चाची,मामा की पत्नी को मामी जानना सरल है अपितु बाक़ी भाषा में ये उपयुक्तता नहीं मिलती।हिंदी भाषा- भाषी देश ही नहीं विदेशों में भी बहुधा रूप से सम्मिलित हैं जिससे विदेशों में भी विख्यात हो रही है हिंदी।

दर्शन, कहानी,कविता यानि गद्य या पद्य दोनों विधाओं में जितनी हिंदी सर्वाधिक लोकप्रिय हुई उतनी ही सहजता से पाठकों के दिल को ग्राह्य भी। विज्ञान के अनुसंधान से लेकर न्यायालय के फैसले में भी हिंदी भाषा की अत्यंत बेसब्री से प्रतीक्षा है। लगातार कोशिश के साथ जैसे आई०आई०टी०,बी०एच०यू० से अभियंता की पढ़ाई में हिंदी भाषा को लाने का प्रयास । सिर्फ़ हमें हर हाल में एक ही योगदान देना होगा,एक ही संकल्प लेना होगा कि अपनी हिंदी को जीवंत रखने हेतु दुनिया के किसी भी कोने में जाएंगे हिंदी ही बोलेंगे।फलस्वरूप एक दिन हिंदी का वर्चस्व हिंदुस्तान ही नहीं विश्व के हर कोने में विद्यमान होगा।भारत में भाषा हिंदी ही सबसे प्रधान है।

हिंदी हमारे देश की मिट्टी की शान है ।
विस्तार ये हिंदी का सकल विश्व जानता
५५ करोड लोगों की समझी जुबान हैस
हिंदी से हिंद ,हिंद से हिन्दोस्तां हुआ
एकीकरण में राष्ट्र की पहचान मान है स
दर्शन कहानी कविता ग़ज़ल गीत समाचार
सबके हृदय को छूती ये हिंदी ही जान है स
लिखने में हिंदी जैसी है,पढ़ने में वैसी है
भाषा न कोई दूसरी इसके समान है स
हर शब्द तर्क पर खरा, निर्माण अर्थपूर्ण
शब्दों का संकलन ही तो हिंदी की आन हैस
जागो हे हिंदीभाषी कि हिंदी पे ज़ोर दो,
दुनिया में सबसे मीठा इसीका विधान है।

सोनी सुगन्धा

सूखा पत्ता

तेज हवा के बहने के पल में,
एक सूखा पात आ ठहरा तल मेंद्य
वहीं एक पेड़ की शाखा से ,
हरे पात ने देखा ऊपर सेद्य
बोला उपहासी प्रयोजन से,
स्वयं के लिए गर्वित था मन सेद्य
तुम यूँ ही हवा से डोला करते,
क्यूँ न सामना उसका करते द्य
जब चले हवा मैं मुस्काता हूँ,
तनिक भी नहीं उससे घबराता हूँद्य
तब सूखा पत्ता मुस्करा के बोला,
और फिर राज खुद का खोलाद्य
तुम लहरा रहे हो जिस डाली पर,
मैं भी फूला था इक दिन डाली परद्य
तब मैं भी था बड़ा अभिमानी,
समझता था खुद को ज्ञानीद्य
अब सत्य जाना जीवन नश्वर,
हरियाली तो कैवल पल भरद्य
तू भी सूख जायेगा सुन प्यारे!
तू सत्य समझ न इतरा रे!
कोई अमर नहीं इस जग में,
सब पात सूख जायेंगे क्षण मेंद्य
सुख का न अभिमान करो,
जग में सबका सम्मान करो द्यद्य

नीलम शर्मा
विकासनगर.देहरादून
उत्तराखंड

लेख

आनलाइन प्यार

वर्तमान समय की चकाचौंध और भागदौड़ की प्रतियोगिता में हम मानव जाति अपनी सभ्यता, संस्कृति और समाज से कहीं -न कहीं पीछे छूटते जा रहे है ।इसका असर किसी व्यक्ति विशेष या समुदाय विशेष पर नहीं पड़ता है । इसका असर वर्तमान और भविष्य दोनों पर पड़ता है ।मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है , वह समाज और संस्कार के बिना अधूरा रह जाता है ।इसी समाज और संस्कार का असर हमारे बच्चों और आने वाली पीढ़ी पर पड़ती है ।इसकी कमियों और खामियों के लिए किसी एक पहलू को दोषी करार दिया जाए तो बहुत हद तक इस समस्या से निवारण पाया जा सकता है , गहराई से देखा जाए तो ऐसा नही है ।

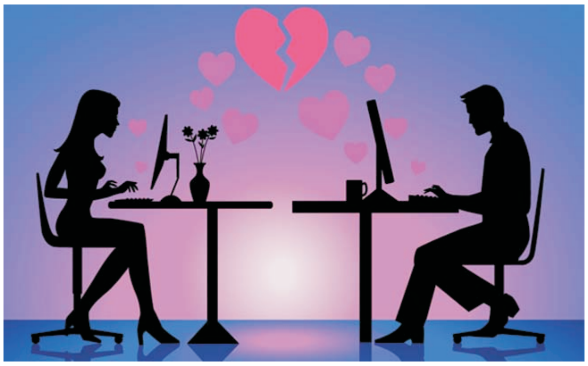

सबसे बड़ी बात यह है कि आज कल के युवा वर्ग ही अपनी सभ्यता और संस्कृति से दूर होते जा रहे है ।जैसे -बड़े -बुजुर्गो के साथ उठने -बैठने मे झिझकना ,बड़ो को प्रणाम करने मे शर्म महसूस करना ,संस्कृति और समाजिक कार्यक्रम से दूर रहना आदि ।इन सबका असर हमारे बच्चों पर भी पड़ता है ।अपने ही घर मे बच्चे परिवार के रहते हुए भी अकेलापन महसूस करते है , कहीं काम -काजी माता-पिता होने पर तो कहीं अन्य कारणवश ।आज सभी अपने परिवार को बहुत कम मे ही समेटना चाहते है ।इसके अंतर्गत घर मे सिर्फ माता-पिता और बच्चे रहते है या तो बुजुर्गो को उनकी हालात पर छोड़ देते है या ज्यादा हुआ तो वृद्धा आश्रम में पहुंचा देते है ।यहीं तो हमारे बच्चे भी देख रहे है और उनके अंदर भी ऐसी ही भावना की उपज होती है और वह यह नही जान पाते है कि परिवार की एकता मे कितना बल है ? वह भी १२-१५ वर्ष की उम्र तक अपना एक निजी कमरा और अपने अंदर एक ऐसा माहौल बना लेते है जहाँ उनके सिवा कोई हस्तक्षेप ना कर सके यहाँ तक कि जन्म देने वाले माता -पिता भी नहीं जान पाते है कि उनके बच्चे कब उनसे दूर होते चले गए ।अतः कहीं -न कहीं इसके माता-पिता और परिवार भी है।

वर्तमान युग के बच्चों मे घटते संस्कार का एक और महत्वपूर्ण पहलू है - इन्टरनेट और सोशल मीडिया का खौफ ।इसके अच्छाई के साथ -साथ बुरे प्रभाव भी अधिक है जो हमारे बच्चों को हमारे संस्कार से दूर करने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है ।आज के दौर मे सोशल परमीडिया से घिरे रहते है ।बच्चे भी इससे अछूते नही रहते है , वह भी फोन के बिना चार लोगों के बीच अपने आप को असहज महसूस करते है और उन्हे एक ऐसी लत लग जाती है जिसमे सब कुछ भूल कर उन्हे अपना सुनहरा भविष्य नज़र आने लगते है ।वह यह भूल जाते है कि इसके अलावा भी कुछ है ।

सोशल मीडिया पर फैले अश्लीलता, वायरल वीडियो और फोटो बच्चो को वही करने के लिए उकसाते है ।वहाँ यह दिखाया जाता है कि कम समय मे मन की सारी इच्छाए और पैसे कमाए जा सकते है ।अश्लीलता की हदे पार कर दी जाती है और वहीं फोटो और वीडियो जल्दी वायरल होती है ।इसका एक बहुत बड़ा असर बच्चो की मानसिकता पर पड़ती है और वह निरंतर इस दलदल मे फसते चले जाते है ।उनके अंदर यह हावी हो जाता है कि मैं भी ऐसा करूंगा तो जल्द ही प्रसिद्धि प्राप्त होगी जो कि ऐसा है नही, वह यह भूल जाते है कि संघर्ष करने से ही फल की प्राप्ति होती है और संघर्ष का फल ही मीठा होता है ।

आज कल सोशल मीडिया पर एक और दिलचस्प बात देखी जाती है और वह है आनलाइन प्यार ,जिसे अपने परिवार और संस्कार का ज्ञान नही वह फेसबुक और अन्य सोशल साइट्स पर प्रेम का खेल खेलते है ।वह रिश्ता कुछ दिन चलने के बाद कहासुनी होने पर रिश्ता खत्म ।ऐसी स्थिति मे बहुत से लोग परेशान होकर आत्महत्या तक कर लेते है । इन सबका असर हमारे बच्चों के संस्कार पर पड़ रहा है ।अगर समय रहते हुए इसे नही रोका गया तो बच्चों के अंदर से संस्कार तो गायब होते जा ही रहे है साथ ही साथ इसके परिणाम भी घातक सिद्ध होगे ।

बन्दना कुमारी
कोलकाता, पश्चिम बंगाल
मेल -bandanak356@mail-com

लेख

बच्चों के बिगड़ते संस्कार

बच्चों में घटते संस्कार के दोषी तो हम माता-पिता ही है। हम ही जीत लगाकर बैठे हैं कि, उसका बेटा या बेटी इतने स्मार्ट हैं वह तो कितने बड़े स्कूल में पढ़ते हैं इंग्लिश भी कितनी अच्छी बोलते हैं, और हम भी लग जाते हैं अपने बच्चों को वैसा ही बनाने में, बस दुनिया की भागम भाग में लग जाते हैं। और यहीं पर हम गलती कर रहे हैं हमें अपने बच्चों को अच्छे संस्कार देने की जरूरत है ना की, उसे देखा देखी सिखाने की। माना कि समय के साथ हमें बदलना चाहिए परंतु आधुनिकता की चाहत में हमें अपने संस्कारों को भी नहीं भूलना चाहिए, और यह संस्कार हम अपने बच्चों को अपने घर से ही दे सकते हैं। पहले के जमाने में हम किसी के घर जाते थे और उनका बच्चा कर हमें नमस्ते पड़ता हमारे पैर छूता तो मन को कितना अच्छा लगता था। हम भी पहले अपने बढ़ो से बातें करते समय जी लगाकर बात किया करते थे जो सुनने में भी मन को भाता था, और आज का जमाना आज हम खुद बड़े हाय हेलो करते रहते हैं, तो बच्चों को हम कैसे पैर छू कर प्रणाम करना सिखाएंगे।

हम एक और गलती कर रहे हैं अपने बच्चों को लेकर वह है "तुलना," करना हर बच्चा अपने आप में खास होता है इसीलिए बात-बात पर माता - पिता ने दूसरे बच्चों के साथ उसकी तुलना नहीं करना चाहिए बार- बार तुलना करने पर बच्चों के दिमाग में यह बात घर कर जाती है की पेरेंट्स उन्हें प्यार नहीं करते, धीरे-धीरे उनके मन में जलन की भावना बढ़ने लगती है और उनका आत्मविश्वास कमजोर होने लगता है। छोटे बच्चों को समझाना मुश्किल काम होता है लेकिन कुछ बातों के बारे में उन्हें बताना बहुत जरूरी है जैसे-ईर्ष्या यदि बच्चे अपने छोटे भाई-बहन से ईर्ष्या करते हैं तो पेरेंट्स को चाहिए की प्यार और धैर्य के साथ बड़े बच्चों को समझाएं कि अब यह छोटा मेहमान भी हमारे घर का सदस्य है, और इसकी देखभाल करना तुम्हारा भी कर्तव्य बनता है यह भी एक अच्छे संस्कारों में आता है।

बच्चों के घटते संस्कार का कारण यह भी है आज के नवयुवक अकेले रहना चाहते हैं उन्हें परिवार में रहना पसंद नहीं किसी की दखलअंदाजी बिल्कुल भी बर्दाश्त नहीं कर सकते। जहां शादी हुई नहीं की वह अपनी अलग दुनिया बसा लेते हैं , पहले के जमाने में कितना बड़ा परिवार रहता था एक ही छत के नीचे २० २५ सदस्य बड़े आराम से एक साथ रह लेते थे किसी को अलग-अलग कमरे की जरूरत नहीं होती थी एक ही बरामदे में सभी मिलजुल पर सो जाया करते थे दादा -दादी ,चाचा - चाची सब का साथ कितना अच्छा लगता था,चाचा के कंधे हमेशा भतिजे के चढ़ने के लिए हंस कर तैयार रहते थे। अपनों के साथ जिंदगी का सफर कब हंसकर गुजर जाता था पता ही नहीं चलता था। एक दूसरे की सुख दुख में काम आते थे कोई भी परेशानी आती सारा परिवार एक साथ उसका सामना करता था किसी गैर की जरूरत ही नहीं होती थी बच्चे भी तो यही देख -देख कर बड़े होते थे और उनके मन में अपने परिवार के लिए लगाव और भी बढ़ जाता था। एक साथ इतने लोगों का भोजन एक साथ बनता सब मिलकर एक साथ खाते तो आपस में और प्यार बढ़ता था दादा -दादी की कहानियां सुनकर सो जाते । कितना सुहाना बचपन हुआ करता था पहले। मगर आज जमाना बदल गया है किसी को किसी की परवाह ही नहीं, आज का इंसान सिर्फ अपने बारे में अपने मतलब के बारे में सोचता है और अपने सुख के लिए ही निरंतर प्रयास करता रहता है उसे सिर्फ अपना परिवार ही चाहिए हम दो हमारे दो । और कहीं अगर किसी घर में बड़े-बुजुर्ग मिल भी जाए तो वह सिर्फ उपेक्षित ही होते हैं ना उन्हें प्यार मिलता है और ना ही उनकी अच्छे से देखभाल होती है ।जहां बड़े-बुजुर्गों ने कुछ अपने मन की ,की तो उनको अनाथ आश्रम का दरवाजा दिखा दिया जाता है।जो बिल्कुल ग़लत बात है ,हम अपने बच्चों से यह उम्मीद करते हैं की वह बड़ा हो कर हमारी देखभाल करें जैसा प्यार बच्चा अभी कर रहा वैसा ही प्यार हमारे बूढ़े होने पर भी करें तो,पहले हमारी यह जिम्मेदारी बनती है की हम भी अपने बूढ़े -बुर्जुगों का सम्मान करे उनके साथ गलत व्यवहार ना करें , आखिर बच्चा घर पर जैसा देखेगा वैसा ही सीखेगा । बच्चे को पहली शिक्षा घर से ही मिलती है । और जरूरी भी है जिनके वजह से हम धरती पर आए उनका तो हमेशा भी सम्मान करना चाहिए और अपने बच्चों को भी यही संस्कार देना चाहिए।

बहुत से घरों में अगर कोई मैहमान आ जाते हैं तो बहुत नाक मुंह बनने लगता है ,जो की सही नहीं है पहले के जमाने में अतिथी देवो भव कहा जाता था उनका स्वागत कितने अच्छे से किया जाता था बच्चे भी यही सब देख कर बड़े होते थे और वह भी इसी तरह के संस्कार लिया करते थे। आज हमें फिर से एक बार जरूरत है अपने बच्चों को वही संस्कार देने की हम अपने बड़ों का सम्मान करें घर में आने वाले मेहमानों का अच्छे से स्वागत करें, बच्चों का मन कोमल होता है जैसा देखेंगे वैसा ही करेंगे और यह सब हम माता पिता पर निर्भर करता है कि हम उन्हें कैसे संस्कार देते हैं उनके जीवन में।

कंचन जयसवाल
नागपुर महाराष्ट्र

संस्मरण

जब मैं छोटी बच्ची थी

कभी-कभी बचपन की कुछ घटनाएं मानस पटल पर कुछ इस तरह अंकित हो जाती हैं कि लाख चाहो,परंतु इसकी स्मृति धूमिल नहीं होती। ऐसी ही एक घटना मेरी भी स्मृति में वो रात एक चमगादड़ की तरह चिपक कर रह गई है। यह घटना उस समय की है, तब मेरी उम्र लगभग सात या आठ वर्ष रही होगी। मैं , मेरा छोटा भाई, मां, पिता जी के साथ अपने एक करीबी रिश्तेदार की शादी, जो कि हमारे गाँव से थोड़ी दूर मेरठ शहर में थी, वहाँ से लौट रहे थे। हालाँकि सभी ने रात का सफर न करने की सलाह दी, परंतु अगली सुबह मेरी परिक्षा शुरू होने वाली थी। तब न चाहते हुए भी हमनें रात्रि को सफर करना तय किया। रात्रि आठ बजे जब मेरठ शहर से हमनें अपने घर के लिये यात्रा शुरू की थी तब मौसम एकदम साफ था। चाँद बड़ी ही शान से आकाश के ललाट पर दमक रहा था। बस सरपट अपनी मंजिल की ओर दौड़े जा रही थी। मैं खिड़की से झांकती सितारों भरी रात में जैसे चांद का ही पीछा कर रही थी। इस पूर्णिमा के चाँद में भी ना जाने कैसा आकर्षण होता है कि मैं इसकी आभा में बचपन से ही खो सी जाती हूँ। लेकिन अरे२२ये क्या२ये काले बादलों ने आकाश को अचानक कहाँ से आ घेरा। अभी तक तो दूर दूर तक भी बादलों का नामोनिशान न था। और फिर क्या२. अभी हम लोगों ने अपना आधा सफ़र ही तय किया था२तभी अचानक घनघोर बारिश शुरु हो गई। आज भी मुझे याद है कि रात्रि के लगभग १२ बज गए थे। सभी बसें और यातायात के साधनों को जहां की तहां रोक दिया गया। और जिस बस में हम लोग थे उसमें ज्यादा सवारियां नहीं थी। जो थी उन सबको बस वाले ने बस खराब का बहाना कर हमें बीच रास्ते में उतार दिया।

अब जो तीन चार सवारियां थी, वो जैसे दृ तेसे अपना इंतजाम करके वहाँ से चलीं गईं। लेकिन हमें हमारे गाँव की तरफ जाने का कोई साधन नहीं मिल रहा था। बारिश तेज होती जा रही थी। बारिश के साथ तूफ़ानी हवाएं भी भयभीत करने लगी थीं । मां, पिता जी ने हम दोनों बहन भाई को कस कर जकड़ रखा था, वो हमारी ढाल बने, अचानक ख़राब हुए मौसम की मार झेल रहे थे। इस भयानक रात का सामना करते हुए हमारा दिल बैठा जा रहा था। उस सूनसान सड़क पर बस हम चार लोग ही थे । किसी भी पल अनहोनी की आशंका से हम सभी काँप रहे थे। तभी अंधेरे में एक परछाई जैसी कोई चीज दिखाई दी, जिसे देखकर मेरी सांसे रुक सी गईं मैंने मां के पैरों के बीच धोती में छिपे हुए, डर से भींची आंखों से देखा कि अभी तो ये एक ही परछाई थी परंतु धीरे धीरे चार लोगों की आकृतियाँ नज़र आने लगीं, जो कि हमारी ही ओर बढ़ती चली आ रहीं थी। ये देखकर मां, पिता जी की साँस गले में अटक गई थी। क्योंकि इन लोगों के हावभाव से साफ पता चल रहा था कि ये चारों ही शराब के नशे में चूर थे।

अब इस भारी बारिश और भयानक रात में हमारी सहायता के लिए कोई परिंदा तक नहीं था वहाँ। हमने एकदूसरे को कस कर जकड़े हुए, लगातार भगवान से प्रार्थना कर रहे थे कि प्रभु आज कुछ चमत्कार कर दो। और हमारी रक्षा करो। जैसे ही ये शराबी लोग भयानक ठहाके लगते हुए हमारे चारो ओर चक्कर लगाने लगे, और जैसे ही हमारी और हाथ बढ़ाने वाले थे, तभी एक बस , पता नहीं कहाँ से हमारे पास आकर रुकी। और बस से एक हट्टा कट्टा व्यक्ति उतरा,रामपुर जाने वालों को बस में बैठने को कहा । जैसे ही हमने अपने गांव का नाम सुना , हम बिना पलक झपके बस में सवार हो गए। मां, पिताजी के चेहरे पर डर, चिंता के भाव अभी भी साफ साफ दिखाई दे रहे थे। उनकी घबराहट,चिंता, परेशानी देखकर मेरी आंखें बरसने लगीं। तभी चालक ने बात शुरू कर दी। उसने बहुत ही आत्मीयता के साथ अपना परिचय दिया और बात आगे बढ़ाई, जिससे मां, पिताजी की जान में जान आ गई। उन्होंने राहत की सांस ली कि अब हम सुरक्षित हैं।

अब मुझे विश्वाश होने लगा था जैसे कोई अदृश्य शक्ति हमारे साथ है और हमारी सहायता कर रही है।और एक अच्छी बात हुई कि बस चालक मेरे पिताजी का पुराना परिचित निकला। मां, पिताजी ने अब राहत की सांस ली।लग रहा था जैसे हमें एक नया जीवन मिला हो। इस बचपन की घटना से महसूस होता है कि प्रार्थना का असर ,चमत्कार घटित होते हैं।और इस प्रत्यक्ष दुनिया से परे एक और दुनिया है ,और ये दुनिया वास्तव में गज़ब सी , अदृश्य शक्तियों की दुनिया होती है।और चमत्कार भी होते हैं। वो कोई चमत्कार ही तो था, कि इतनी काली भयानक रात्रि , मूसलाधार बारिश और दूर दूर तक एक परिंदा भी नज़र नहीं आ रहा था । फिर कोई तो शक्ति थी ,जिसने आकर हमारी सहायता की। और ये सिर्फ मन का भ्रम भर नहीं है, यह एक सत्य घटना है। और इस दुनिया में घटने वाली घटनाओं पर मुश्किल से ही विश्वास होता है। लेकिन अब मुझे इस गज़ब रहस्यमई दुनिया पर विश्वास होने लगा है।

अलका गुप्ता
नई दिल्ली
फोन नं. - 8920425146

कहानी

बनारसी साड़ी

बरसात के बाद, एक दिन सागर की मां ने अच्छी धूप निकलती देख अपने पुराने बक्सों को धूप दिखाने के लिए लाइन से छत पर खोल खोल कर रख दिए। तभी सागर को न जाने क्या हुआ उसने मां की साड़ियों के बीच से एक हरे रंग की बनारसी साड़ी निकाल ली। ”मां यह साड़ी मुझे दे दो, बड़ी होकर मैं इसे पहनूंगी“ ।तभी सागर के गाल पर एक जोरदार थप्पड़ पड़ा। ये सुनकर उसकी मां क्रोध से तमतमा उठी ।“तुझे समझ नहीं आता, हजारों बार तुझे समझाया है, कि लड़कों की जून में रहा कर।हमारी मिट्टी क्यों खराब कर रहा है तू“,दोनों हाथ जोड़े मां चिल्ला रही थी।“सागर इज्जत से जीने दे हमें ।लड़कों की तरीके से क्यों नहीं रहता ,क्या लड़की बना फिरता है। इतने लंबे-लंबे बाल२ और अब तो नाक कान भी छिदा लिए। सागर की मां अपने माथे को पीटती रोती, चिल्लाती,सागर के बाल पकड़ पकड़ कर उसे झिझोड़े जा रही थी । शोर सुनकर सागर की बहन और भाई भी वहां आ पहुंचे। सागर की बहन ने मां को शांत करने की कोशिश की और सागर को एक कमरे में बन्द कर दिया गया। ये सब सागर के साथ पहली बार नहीं हुआ था। अक्सर ऐसा ही होता था।कई कई दिनों तक उसको खाना नहीं दिया जाता, कमरे में बंद रखा जाता था कि वह लड़कियों की तरह रहना, बोलना बंद कर दे।और लड़कों की तौर तरीके से रहना सीख जाए ।वह सब सह रहा था। वह रात रात भर रोता रहता, भगवान से पूछता, कि उसकी गलती क्या है? उसने उसे ऐसा क्यों बनाया है? उसके अपने ही उसे क्यों नहीं समझते? क्या अब उसे लोगों के गंदे, भद्दे व्यंग बाण, और भद्दी हँसी के साथ जीना पड़ेगा? सागर ने बहुत कोशिश की लेकिन अपने अंदर की लड़की को कभी नहीं मार सका। सागर के मन में भी अक्सर मां के शब्द गूंजते रहते ”कहीं डूब कर मर जा सागर“ ,वह जीते जी दिन पर दिन मर रहा था ।एक दिन सुबह घर में शोर होने लगा ।

सागर का कमरा खाली था।मां की ममता रो रही थी मगर समाज के डर से सोच रही थी कि अब वह लौटकर कभी ना आए। समय पंख लगा कर उड़ चला ५ वर्ष बीत चुके थे ।घर ,गली मोहल्ला शायद सागर को भूल चुका था। आज सागर की बहन के विवाह के उपलक्ष में घर में कीर्तन का आयोजन किया गया। कीर्तन में भव्य कीर्तन मंडली का आगमन हुआ। सागर के परिवार वाले बहुत खुश थे कि इतने कम पैसों में इतना भव्य अयोजन हो रहा था। इस कीर्तन मंडली में एक सदस्य बड़ी-बड़ी काजल भरी आंखें, माथे पर लाल सूरज की तरह दमकती हुई बड़ी सी बिंदी, नाक में छोटी सी नथ, कानों में बड़े-बड़े से झुमके और लाल साड़ी पहने , अलौकिक आभामंडल लिए,सभी का बरबस ही ध्यान आकर्षित कर रहा था। तभी किसी ने दबे शब्दों में कहा ”देखो साक्षात् देवी लग रही है लाल साड़ी में“ तभी उस व्यक्ति ने उत्तर दिया ”वो तो ठीक है परंतु दिखाई नहीं देता यह कौन है“। तभी माता के जयकारे से सारा वातावरण गूंज उठा। फिर तो भक्ति की ऐसी लहर उमड़ी ,वहां उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति मंत्र मुग्ध हो प्रभु भजन में खो गया। जब कीर्तन समाप्त हुआ तभी लाल साड़ी वाली ने सागर की मां से दुल्हन से मिलने की इच्छा जाहिर की । लाल साड़ी वाली दुल्हन को एक टक निहारती ही रह गईं। तभी सागर की मां ने दुल्हन की झोली फैला कर माताजी से आग्रह किया कि उसकी झोली में अपने आशीर्वाद स्वरुप कुछ डाल दें।“आप ऐसा आशीर्वाद दें कि हमारे सारे कष्ट दूर हो जाएं और खुशियां लौट आएं “ हाथ जोड़े सागर की मां याचना कर रही थी। तभी लाल साड़ी वाली बोली ”ठीक है, लेकिन पहले मेरी एक शर्त पूरी करनी पड़ेगी।“ ”बोलो माताजी इस घर में बहुत वर्षों के बाद कोई समारोह हुआ है, हमने बहुत बुरे दिन देखे हैं।आप बस आदेश दें। ”कुछ नहीं बस वह आपके बक्से में जो हरे रंग की बनारसी साड़ी रखी है न,बस वह दे दो।“ लाल साड़ी वाले ने हाथ जोड़कर अपनी बात रखी ।जैसे ही सागर की मां और बहन ने यह शब्द सुने उन्हें सागर को पहचानने में देर नहीं लगी। और फिर तीनों के भीतर जो जज्बातों का तूफान और आंखों में जो समंदर उमड़ा, वह पल में ही सारे ही गिले, शिकवे अपने साथ बहा ले गया। और सागर की मां ने वह हरी बनारसी साड़ी उस लाल साड़ी वाली माता जी को दे दी।

अलका गुप्ता नई दिल्ली
फोन नं. 8920425146

सबसे कीमती चीज-सिद्धार्थ शंकर

एक जाने-माने स्पीकर ने हाथ में पाँच सौ का नोट लहराते हुए अपनी सेमीनार -रु39यारू की, हाल में बैठे सैकड़ों लोगों से उसने पूछा, ”ये पाँच सौ का नोट कौन लेना चाहता है?“ हाथ उठाना शुरू हो गए। फिर उसने कहा, ”मैं इस नोट को आपमें से किसी एक को दूंगा पर उससे पहले मुझे ये कर लेने दीजिये।” और उसने नोट को अपनी मुट्ठी में चिमोड़ना शुरू कर दिया। और फिर उसने पूछा, ”कौन हे जो अब भी यह नोट लेना चाहता है?” अभी भी लोगां के हाथ उठने -शुरू हो गए। ”अच्छा, उसने कहा, ”अगर मैं ये कर दूँ?” और उसने नोट को नीचे गिराकर पैरां से कुचलना -शुरू कर दिया। उन्होंने नोट उठा , वह बिल्कुल चिमुड़ी और गन्दी हो गयी थी।” क्या अभी भी को है जो इसे लेना चाहता है?” और एक बार फिर हाथ उठाने -शुरू हो गए। ”दोस्तो आप लोगों ने आज एक बहुत महत्वपूर्ण पाठ सीखा है। मैने इस नोट के साथ इतना कुछ किया फिर भी आप इसे लेना चाहते थे। क्योंकि ये सब होने के बावजूद नोट की कीमत घटी नही,उसका मूल्य अभी भी 500 था। जीवन में कई बार हम गिरते हैं, हारते हैं, हमारे लिए हुए निर्णय हमे मिट्टी में मिला देते हैं। हमें एसो लगने लगता है कि हमारी कोई कीमत नहीं है। लेकिन आपके साथ चाहे जो हुआ हो या भविष्यट जो हो जाए। आपका मूल्य कम नहीं होता। आप महत्वेपूर्ण है, इस बात को कभी मत भूलिए। कभी भी बीते हुए कल की निराशा को आने वाले कल के सपनों को बर्बाद मत करने दीजिए। याद रखिये आपके पास जो सबसे कीमती है, वो है आपका जीवन।”

जगदीष निवास 1 नं0 कालोनी
दुर्गास्थान, कटिहार बिहार
मो0-7488678662

एक गीत

तुम्हारा देश परदेशी, बुलाता है चले आओ।
तड़पता है तुम्हारे बिन, न उसको छोड़ अब जाओ।।

अभी गुजरा हूँ परदेशी , तुम्हारे घर के आगे से।
न चुल्हा ही जला देखा, न रौनक थी दिवारो पे।।
अभी त्यौहार का मौसम, सभी के घर सजे ऐसे।
सितारे खुद जमी पर आ, घरों में सज गये जैसे।।
सजी महफिल सितारों की, यहाँ आ गीत इक गाओ
तुम्हारा देश परदेशी, बुलाता है चले आओ।
तड़पता है तुम्हारे बिन, न उसको छोड़ अब जाओ।।

पिता जी आज परदेशी, तुम्हारे मिल गये मुझको।
लिये वो अश्क आंखो में, दिये संदेश इक तुमको।।
न तू परवाह कर मेरी, मगर परवाह माँ की कर।
तुम्हारी याद में जीते, हुए भी वो रही है मर।।
समय है अंत अब उसका, निवाला संग इक खाओ।
तुम्हारा देश परदेशी, बुलाता है चले आओ।
तड़पता है तुम्हारे बिन, न उसको छोड़ अब जाओ।।

तुम्हारे साथ के घुरहूँ, बटोरन और पलटन जी।
डुबुकिया बाग में बैठे, गये हैं चार बोलत पी।।
सुबह से राम जी चाची, चचा से खूब झगड़ी हैं।
चचा कुछ भी नह बोले, पता उनको वो तगड़ी हैं।।
सुनाऊँ मैं तुम्हें कितना, मिलो गर वक्त तुम पाओ।
तुम्हारा देश परदेशी, बुलाता है चले आओ।
तड़पता है तुम्हारे बिन, न उसको छोड़ अब जाओ।।

अखंड गहमरी

अखंड प्रताप सिंह
गहमर, गाजीपुर

क्या आप मॉडलिंग व अभिनय में कैरियर की शुरूआत करना चाहती हैं और अनुभव नहीं है तो आइये अनुभव भी, भ्रमण भी और परिश्रमिक भी। आवश्यकता है एक महिला की जो

उम्र : 25 से 45 वर्ष

कद : 5 या सवा 5 फुट

बदन : गठीला (मध्यम)

रंग : सांवला

बाल : लम्बे

चेहरा : हसमुख

आवाजः औसत

हावी : फोटोशूट, अभिनय और देशाटन।

ज्ञान : भारतीय सभ्यता व संस्कृति

सक्षम : एक फोटो/वीडियोग्राफर के साथ अकेले यात्रा करने में।

समय : पर्याप्त

संम्पर्क करें 9451647845 अखंड गहमरी परिचय, तस्वीरें व वीडियो भेजें **akhandgahmari@gmail.com**

एक बार फिर से

2nd वाइफ टिफिन सर्विस

खाना ससुराल जैसा, सासू के प्यार ऐसा

शुद्ध शाकाहारी खाना

एक टाइम भी लेने की सुविधा।

पौष्टिकता से पूर्ण स्वादिष्ट खाना।

त्यौहारों के दिन स्पेशल खाना।

आकर खाने की भी सुविधा

एक महीने का पैसा अग्रिम।

टिफिन आपका

नवरात्रि, छठ एवं अन्य धार्मिक सप्ताह में बिना लहसुन प्याज का खाना।

प्रतिदिन बदल बदल कर खाना

मधुमेह रोगीयों के लिए विशेष चावल व सब्जी

मात्र 3500 रूपये प्रतिमाह

अखंड प्रताप सिंह 9451647845

माँ कामाख्या
गोपाल राम गहमरी
स्व.सरोज सिंह
साहित्य सरोज
9451647845
sarojsahitya55@gmail.com
साहित्य सरोज की मेल आई डी
गहमर वेलफेयर सोसाइटी
गहमर, गाजीपुर, उ.प्र.
प्रसिद्ध जासूसी उपन्यासकार गोपाल राम गहमरी की स्मृति में आयोजित
9वाँ गोपाल राम गहमरी सम्मान समारोह
24 दिसम्बर 2023 को
जानकारी भेजने की अंतिम तिथि 31 अक्टूबर 2023
आयोजन स्थल -ग्राम गहमर, जनपद गाजीपुर
उत्तर प्रदेश वाराणसी से 90 किलोमीटर पूरब
अखंड गहमरी
9451647845

माँ कामाख्या
गोपाल राम गहमरी
स्व.सरोज सिंह
साहित्य सरोज
9451647845
sarojsahitya55@gmail.com
साहित्य सरोज की मेल आई डी
गहमर वेलफेयर सोसाइटी
गहमर, गाजीपुर, उ.प्र.
प्रसिद्ध जासूसी उपन्यासकार गोपाल राम गहमरी की स्मृति में आयोजित
9वाँ गोपाल राम गहमरी सम्मान साहित्य व कला महोत्सव 22 से 24 दिसम्बर 2023
दो दिन काव्य सम्मेलन, परिचर्चा, भाव नृत्य
कहानी वाचन, भ्रमण, सांस्कृतिक कार्यक्रम, गंगा आरती
कामाख्या दर्शन पूजन, गंगा स्नान, सम्मान समारोह, पुस्तक,
पेटिंग एवं शार्ट फिल्म प्रर्दशनी साझा संग्रह विमोचन
आयोजन स्थल -ग्राम गहमर, जनपद गाजीपुर
उत्तर प्रदेश वाराणसी से 90 किलोमीटर पूरब
अखंड गहमरी
9451647845